thearyasamaj.org

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघनतो अरावणः॥

आर्य संकल्प

(बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख-पत्र)

वर्ष-38 फरवरी अंक-2

१२ फरवरी

महर्षि दयानंद सरस्वती

के जन्मदिवस पर हार्दिक शुभकामनाएं।

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
कार्यालय : श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला, पटना-4 (बिहार)

thearyasamaj.org

आर्य संकल्प

सम्पादक
रमेन्द्र कुमार गुप्ता
मो. 9334184136

सह सम्पादक
संजय सत्यार्थी
मो. 9006166168
प्रेम कुमार आर्य
मो. 9570913817

सम्पादक मंडल
पं० व्यासनन्दन शास्त्री
श्री बिन्देश्वरी शर्मा
मो. 8544088138

संरक्षक
गंगा प्रसाद
सभा प्रधान

कोषाध्यक्ष
सत्यदेव गुप्ता
स्वत्वाधिकारी एवं प्रकाशक
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
श्री मुनीश्वरानन्द भवन
नयाटोला, पटना-800 004
दूरभाष : 07488199737
E-mail_arya.sankalp3@gmail.com
सदस्यता शुल्क
एक प्रति : 15/-
वार्षिक : 120/-

मुद्रक :
जय उमा प्रिन्टर्स
मो. 9430246879

संपादकीय

शिव रात्री बनी वोध रात्री आर्यों का मंगल अवसर

संसार में जितने भी महापुरूष हुए हैं सभी के जीवन में कोई न कोई घटनाएँ अवश्य हुई हैं, जहाँ से उनके जीवन को कोई नई दिशा मिली है। वेदाद्धारक महर्षि दयानन्द के जीवन में भी एक ऐसा अवसर आया "शिव रात्री का महापर्व" जहाँ से बालक मूलशंकर के जीवन में नई क्राँति का सूत्रपात होता है। गुजरात प्रांत के टंकारा नामक ग्राम में सुसम्पन्न उच्चकुलीन औदीच्य ब्राह्मण परिवार में कर्षन जी तिवारी के यशस्वी पुत्र बालक मूल शंकर अपनी पिताजी के आदेश पर शिवरात्री के अवसर पर शिव का व्रत रखते है। सायं काल पिताजी के साथ शिव का मंदिर जाकर शिव पिण्डी की पूजा, अर्चना करते हैं साथ ही शिव के दर्शन हेतु आँखों पर शीतल जल के छीटे दे देकर रात्रि जागरण का प्रयास करते हैं। देर रात गए अचानक क्या देखते हैं कि एक चूहा शिव की पिण्डी पर न केवल उच्छल-कूद कर रहा है बल्कि चढ़ाये गये प्रसाद को भी खा रहा है। प्रतिभाशाली बालक ने जब यह दृश्य देखा तो उसकी आस्था डगमगा गई मन में प्रश्न उठा जिस शिव के वारे में मैंने सुना है यह वह शिव कदापि नहीं हो सकता? यह तो नकली शंकर है। इस घटना से उनके हृदय में सच्चे शिव को प्राप्त करने की लालसा जागृत हो गई। संकल्प लिया कि मैं सच्चे शिव को प्राप्त करूँगा।

thearyasamaj.org

आर्य संकल्प

-: सूची :-

क्रम	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय	
2.	वेद मंत्र	1
3.	वेद प्रार्थना	2
4.	अंधविश्वास-निर्मूलन	4
5.	यदि ईश्वर...	12
6.	कविता ...	15
7.	आचार्य ज्ञानेश्वरार्य	16
8.	शिक्षा की समस्याएं	18
9.	हवन	21
10.	सत्य-सत्य है	28
11.	महर्षि दयानन्द	30
12.	कार्यक्रम	32

इस पत्रिका में दिये गये लेख लेखकों के अपने विचार हैं, इससे सम्पादक का कोई सम्बन्ध नहीं है ।

फरवरी

कल्याणकारी मार्ग पर ही चलें

स्वस्ति पन्थामनु चरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता सं गमेमहि॥

(ऋग्वेद 5/51/15)

पदार्थ- हे परमेश्वर! आपकी कृपा से हम (**सूर्य-चन्द्रमसौ इव**) सूर्य-चन्द्रमा के समान (**स्वस्ति**) कल्याणकारी (**पन्थाम्**) मार्गों के (**अनु, चरेम**) अनुगामी हों और हम (ददता) दानशील (अघ्नता) अहिंसक रक्षक, सेवक और (**जानता**) ज्ञानी-विद्वानों के साथ (**पुनः**) वार (**सं गमेमहि**) सत्सङ.ति करें ।।

भावार्थ- सब मनुष्यों को सूर्य के प्रकाश, ऊष्मा, ऊर्जा और नियमबद्धता तथा चन्द्रमा के समान, शीतलता एवं नियमबद्धता, आदि गुणों से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये तथा सदैव दानी, अहिंसक और विद्वानों की ही संगति करनी चाहिये; कृपण, हिंसक और भूखों की नहीं।

काव्यरूपान्तरण-

सूर्य चन्द्र की भाँति जगत् में,
सुख-पथ के अनुगामी हों।
ज्ञान और निज शुभ कर्मों से,
सुख पावें जग-नामी हों ।।1।।
दानी रक्षक विद्वानों का,
साथ सदा जग में पावें।
हे परमेश्वर ! इस जीवन में,
शुभ कर्मों के पथ जावें ।।2।।

डॉ. वेद प्रकाश, मेरठ

■

thearyasamaj.org

वेद प्रार्थना

आचार्य ज्ञानेश्वरार्य, रोजड़

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।।

अथर्ववेद 10/191

शब्दार्थ- **सं गच्छध्वम्**- हे मनुष्यों! तुम सब मिलकर चलो, **सं वदध्वम्** - मिलकर बोलो, **वो** तुम्हारे, **मनांसि**- मन, सं **जानताम्** - समान ज्ञान वाले हों, **यथा**- जैसे, **पूर्वे देवां** - पहले के देव लोग, **सं जानाना**- एक समान ज्ञान वाले होकर, **भागम्** - अपने लक्ष्य को, **उपासते** - प्राप्त करते रहे हैं वैसे ही तुम भी मिलकर करो।

भावार्थ- परमेश्वर ने हमें एक विचार वाले, एक वाणी वाले, एक व्यवहार वाले, एक सिद्धान्त वाले बनकर जीवन को चलाने का आदेश दिया क्योंकि जहाँ संगठन होता है वहीं परस्पर प्रेम उत्पन्न होता है, जहाँ प्रेम होता है वहाँ पर विश्वास व श्रद्धा उत्पन्न होते हैं और जहाँ विश्वास व श्रद्धा बने होते हैं वहीं पर सन्तोष, निर्भीकता, शान्ति, सुख की स्थापना होती है अन्यथा नहीं।

किन्तु आज ईश्वर की बनाई धरती पर उसके पुत्र कितने अलग-अलग हो गये हैं, पृथिवी के टुकड़े-टुकड़े करके सैकड़ों अलग-अलग माण्डलिक राष्ट्र बना लिए हैं। इतना ही नहीं उनकी अपनी अलग ही धर्म हैं, अलग ही ईश्वर, अलग ही पूजा-पद्धतियाँ, अलग ही शिक्षा, सभ्यताएँ, संस्कृतियाँ बना ली है। एक ही रंग, रूप, आकार, स्वरूप वाले मनुष्य इन अपने बनाये खण्डों में विदेशी बन गये हैं।

पृथ्वी के खण्डों में बाँटने की बात छोड़िये भारत देश की तो ऐसी विचित्र स्थिति बन गयी है कि अपने ही देश में भाषाओं के भेद के कारण पूर्व वाले पश्चिम वालों के लिए, उत्तर वाले दक्षिण प्रान्त वालों के लिए अजनबी से बन गये हैं, एक दूसरे से मिलते हैं तो अपने भावों को वाणी से अभिव्यक्त न करके गूंगे से बन जाते हैं और आश्चर्य तो यह है कि दुर्भाग्य से इस अलगाव की स्थिति को दोष न मानकर गुण मान लिया गया है और इस अलगाव को बनाये रखते हुए एकता को प्रमाणित किया जाता रहा है। सिद्धान्त यह बनाया है कि अनेकता में एकता उत्पन्न करो। जो कदापि सम्भव नहीं होगा।

जहाँ व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण विघठन होता है, वहाँ पर परस्पर विरोध रहता है और जहाँ पर विरोध होता है वहाँ पर आपस में एक दूसरे के प्रति वैर, राग, द्वेष, ईर्ष्या उत्पन्न होते हैं और द्वेष आदि के कारण ही मन में

thearyasamaj.org

संशय, चिन्ता, भय बने रहते हैं। यह सब बातें जीवन को अशान्त व दुःखी बना देते हैं। परस्पर की फूट, विरोध के कारण व्यक्ति, समाज व देश को बड़ी हानि उठानी पड़ती है, विघटित परिवार व समाज को देखकर ही विरोधी, शत्रु, स्वार्थी अनुचित लाभ उठाते हैं और समाज, गाँव, देश पराधीन बन जाते हैं। इतिहास में हमें ऐसा जानने को मिलता है।

इसलिए वेद मन्त्र में कहा कि मनुष्यों! संगठित बनो क्योंकि सामाजिक, सर्वहितकारी, राष्ट्रीय कार्यों को बिना सामूहिक प्रयत्नों के एक अकेला व्यक्ति कदापि सिद्ध नहीं कर सकता है। आसुरी शक्तियाँ मिलकर, संगठित होकर ही विघटित श्रेष्ठ मनुष्यों के सुख-शान्तिमय जीवन को नष्ट-भ्रष्ट कर देती हैं। संगठन में शक्ति होती है। आज अच्छे मनुष्यों की संख्या अधिक है और बुरे व्यक्ति कम हैं किन्तु अच्छे व्यक्ति अधिक होते हुए भी असंगठित हैं। थोड़े से बुरे, असुर व्यक्ति संगठित होकर अधिक संख्या वाले अच्छे व्यक्तियों को चोरी, डाका, हिंसा, उत्पीड़न, भय, आतंक आदि कुकृत्यों से दुःखी बनाये हुए हैं।

वेद कहता है समान विचार, समान ज्ञान, समान सिद्धान्त के होने पर ही, न केवल व्यक्तिगत अपितु सामाजिक, राष्ट्रीय सिद्धियाँ, बड़े-बड़े लक्ष्य प्राप्त किये जा सकते हैं अन्यथा नहीं। इतिहास बताता है कि पूर्व काल में समाज, राष्ट्र, विश्व के कर्णधार संगठित होकर ही विश्व विजयी बने, बने रहे और विघटित व्यक्ति समाज, देश पराजय को प्राप्त हो गये।

हे प्रभो! आपसे हमारी यही हार्दिक प्रार्थना है कि हमारे अन्तःकरणों में परस्पर संगठन, प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, निष्ठा उत्पन्न करो कि जिससे हम समस्त पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय बुराईयों को दूर करके सारे मनुष्य एक हो जायें। पृथ्वी पर रहनेवाले सभी मनुष्य एक ईश्वर, एक भाषा, एक भजन, एक भेषज, एक भोजन, एक भूषा से युक्त हो जायें। कहीं भी किसी को किसी से कोई भी वैर, विरोध विघटन न हो।

●

इस बात का श्रेय दयानन्द को ही प्राप्त होगा कि उन्होंने सर्वप्रथम वेदों की व्याख्या के लिए निर्दोष मार्ग का आविष्कार किया। जंगली लोगों की कही जाने वाली पुस्तक को धर्म-पुस्तक होने का वास्तविक अनुभव उन्होंने ही किया।

अरविन्द

thearyasamaj.org

अंधविश्वास-निर्मूलन

पिछले अंक का शेष..

लेखक- मदन रहेजा, मुम्बई

अंधविश्वास : 37 : प्रेम करने से ईश्वर में ध्यान नहीं लगता।

निर्मूलन : बिल्कुल गलत धारणा है, क्योंकि धर्म की नींव प्रेम पर ही टिकी है। ईश्वर तक पहुँचने की सबसे पहली सीढ़ी अहिंसा है अर्थात् संसार के प्राणीमात्र से वैर की भावना भी न रखना। अर्थापति से देखेंगे तो इसका तात्पर्य यही निकलता है कि संसार के सभी प्राणियों से प्रेम की भावना रखना। प्रेम और मोह (आसक्ति) में बड़ा अन्तर है। प्रेम त्याग सिखाता है और मोह में स्वार्थ छुपा होता है। प्रेम ही का दूसरा नाम आनन्द है- ईश्वर है। तभी तो धर्मग्रन्थों में कहा है- प्रेम ही ईश्वर हैं और ईश्वर ही प्रेम है (God is Love and Love is God) जब तक प्रेम का पाठ नहीं पढ़ा तब तक ईश्वर में ध्यान लगना कठिन है।

ध्यान न लगने के और भी कई कारण हो सकते हैं। जब तक हमारा मन वश (Control) में नहीं है- ध्यान नहीं लग सकता। चित्त की वृत्तियों (व्यापार) को रोकने का नाम ही योग है। ईश्वर में ध्यान लगाना और इसी का अभ्यास करने से संसार की वस्तुओं से वैराग्य उत्पन्न होता है और ईश्वर में ध्यान लगना शुरू होता है। ध्यान लगते ही समाधि की अवस्था प्राप्त की जा सकती है जिसमें आनन्द की अनुभूति होती है। प्रेम ही ईश्वर का साक्षात्कार कराता है। धारणा-ध्यान-समाधि योग की आन्तरिक प्रक्रियाएँ हैं जिनकी सिद्धि से आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार होता है। जब तक बाहर की वस्तुओं में ध्यान लगा रहेगा, तब तक अंदर की यात्रा प्रारम्भ नहीं हो सकती।

व्यक्ति को चाहे दुनियावादी निभानी हो, चाहे प्रभु के ध्यान में रम जाना हो, प्रेम ही उसके जीवन का मूलाधार है। किन्तु प्रेम की पराकाष्ठा में उसे किसी एक का होना पड़ेगा और शेष संसार से मोह के बन्धन तोड़ने होंगे। इस वैराग्य में भी सांसारिक लोगों के प्रति प्रेम बना रहेगा, केवल मोह के बन्धन ही टूटेंगे। प्रेम एक शाश्वत और पवित्र भावना है। कोई भी मनुष्य दुनिया से विरक्त होकर भी, दुनिया से अपने प्रेम-भाव का विसर्जन नहीं कर सकता। जिसने भी ऐसी भ्रान्ति फैलाई है कि प्रेम करने से ध्यान नहीं लगता, गलत है। प्रेम तो मिलना सिखाता है- आत्मा को परमात्मा से मिलना सिखाता है। प्रेम है तो ईश्वर में ध्यान लग सकता है और ईश्वर में ध्यान लगे तो समझ

thearyasamaj.org

लेना चाहिए कि प्रेमरस का स्वाद आने लगा है।

अंधविश्वास : 38 : ईश्वर से माफ़ी माँगने पर किये हुए गुनाह (पाप) माफ़ हो जाते हैं।

निमूर्लन : संसार में तो ऐसा संभव है क्योंकि मनुष्य अल्पज्ञ है, किसी को माफ़ कर देता है और किसी को बिना कारण दंड देता है। किन्तु ईश्वर सर्वज्ञ है- सब कुछ जानता है, अत: ईश्वर के बारे में ऐसी धारणा कि पाप-कर्मों को क्षमा कर देता है- बहुत बड़ी भ्रान्ति है। किसी के भी किये हुए कर्म बिना फल दिये समाप्त नहीं होते, अर्थात् हर कर्म का फल कर्ता को मिलता ही है- कर्मफल भोगे बिना कोई चारा नहीं। अगर किसी ने गुनाह किया है- पापकर्म किया है तो उसका फल तो अवश्य मिलना है- तो किसको मिलेगा? कर्त्ता को नहीं मिलेगा तो फिर किसको मिलेगा? माफ़ी माँगने से या प्रायश्चित करने से कर्मफल प्राप्त न हों- ऐसा होगा तो अन्याय होगा। ईश्वर अन्याय कभी नहीं करता- वह तो न्यायकारी है- न्यायाधीश है। जिसने भी कर्म किया है, अच्छा या बुरा, शुभ या अशुभ-ईश्वर बिना किसी की सिफारिश से फल अवश्य देता ही है। इस कर्मफल से कोई नहीं बच सकता।

लोग प्राय: कहते हैं कि तौबा करने से या माफ़ी माँगने से परमपिता परमात्मा अपने बच्चें को माफ़ कर देता है। ऐसा मानना अज्ञानता है। हाँ! प्रायश्चित करने से ईश्वर उसे मनोबल प्रदान करता है- उसे साहस देता है जिससे वह दुबारा वैसा अशुभ कर्म न करे। परन्तु जीवात्मा स्वतंत्र है, कर्म करता है- भूल भी जाता है- फिर प्रायश्चित्त करता है। क्या ईश्वर उसे माफ कर सकता है? कभी नहीं। कर्मफल देना ही न्याय है और इसी न्याय-व्यवस्था पर विश्वास करके लोग शुभकार्य करते हैं कि उन्हें शुभफल मिलेगा। अगर ऐसा न हो तो कोई शुभकर्म कभी न करे। हमेशा कोई गलत काम करे और दो आँसू बहाकर पश्चाताप करके माफी माँग ले- क्या उसे माफी मिलना संभव है?

अत: हर कर्म करने से पहले सोचना-विचारना आवश्यक है। जहाँ भी शंका-भय-लज्जा उत्पन्न हो वह कर्म कभी नहीं करना चाहिए- समझ लेना चाहिए कि वह कर्म अशुभ है; और जिस कर्म करने में स्फूर्ति-साहस-निडरता और नि:शंकता हो, उस कर्म को करने में देर नहीं करनी चाहिए, क्योंकि वह शुभ कर्म है। इस प्रकार की चेतावनी ईश्वर की ओर से होती है। यह परमपिता परमात्मा की कृपा है कि वह सदा सचेत करता रहता है।

अंधविश्वास : 39 : रात्रि के समय किसी वृक्ष के नीचे बैठने और पेशाब (लघुशंका) करने से भूत-प्रेत की छाया लगती है जिससे

thearyasamaj.org

वह व्यक्ति पागल हो जाता है और अन्त में मर भी सकता है।

निर्मूलन : सबसे पहले तो यह जानना जरूरी है ऐसा क्यों कहते हैं और रात्रि में ही मनाही क्यों?

वन-वनस्पतियाँ देवता हैं- जड़ देवता हैं। इनसे सब जीवों को खाने की तथा औषध-सामग्री प्राप्त होती है। हरे वृक्षों में जो हरियाली पौधे दिन में सूर्य की किरणों की सहायता से ऑक्सयीजन (O^2) छोड़ते हैं और कार्बन-डाइआक्सॉइड (Co^2) को ग्रहण करते हैं। रात्रि में सूर्य की रोशनी न होने के कारण यह प्रक्रिया उलटी हो जाती है अर्थात् वृक्ष कार्बन-डाइऑक्साइड छोड़ते हैं और ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं। मनुष्य को श्वास लेने के लिए सदा ऑक्सीजन चाहिए; प्रश्वास में वे कार्बन-डाइऑक्साइड छोड़ते हैं। रात्रि में जहाँ कार्बन-डाइऑक्साइड अधिक मात्रा में है और जिसका स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है, उस जगह जाना ठीक नहीं है। रात्रि में वृक्ष के नीचे पेशाब करने से हो सकता है वहाँ कहीं किसी बिल से साँप इत्यादि जीव बाहर निकल आए और वह डस ले जिससे जान को खतरा हो सकता है। रात्रि में अनेक प्रकार के जीव-जन्तु वृक्षों के आसपास होते हैं। मनुष्य वहाँ जाकर विश्राम करे या सो जावे या गंदगी करे- ऐसा ठीक नहीं है। कार्बन-डाइऑक्साइड गैस ग्रहण करने के कारण स्वास्थ्य बिगड़ सकता है और अधिक मात्रा में कार्बन-डाइऑकसाइड ग्रहण करने से मृत्यु की नौबत भी आ सकती है। अतः सावधानी बरती जाए।

साधारण लोग ये वैज्ञानिक बातें समझते नहीं हैं। हो सकता है उनको सावधान करने के लिए डराया जाए कि भूत-प्रेत पीछे लग जाते हैं। शायद इसी डर से वे रात्रि में वृक्ष के नीचे लघुशंका इत्यादि न करें।

भूत-प्रेत कोई नहीं होता जो पीछे पड़ जाता है। भूत तो वह है, जो बीत गया, और जो मृत शरीर है उसे प्रेत कहते हैं। जब मृत शरीर का अंतिम संस्कार किया जाता है तो वह भूत अर्थात् 'गुज़री हुई बात' बन जाता है। भूत-वर्तमान-भविष्य ये तीन काल होते हैं। भूत का अर्थ 'तत्त्व' भी है, जैसे पाँच तत्त्वों से बना शरीर 'पंचभौतिक शरीर' कहलाता है। भूत जीते-जागते 'प्राणी' को भी कहते हैं जैसे 'सर्वभूतों' (सब प्राणधारियों) में मनुष्य श्रेष्ठ प्राणी है। जिस काल्पनिक भूत-प्रेत की बात लोगों को परेशान करती है- वह वास्तव मे कुछ भी नहीं है। ये सब पोपलीलाएँ हैं। ब्राह्मण लोगों के कारनामे हैं- स्वार्थी लोगों की उत्पन्न की हुई भ्रान्तियाँ हैं जिनका कोई सर-पैर नहीं होता।

thearyasamaj.org

यह संसार पंचमहाभूतों का ही प्रपंच है। पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु और आकाश- इन पाँचों भूतों (जड़ वस्तुओं) से ही सब वस्तुएँ पैदा होती हैं। यह शरीर भी इन्हीं जड़ वस्तुओं (पंच महाभूतों) से बना है। इन पाँच जड़ वस्तुओं को भी भूत कहते हैं। भूत=जड़। जड़ वस्तु में चेतना-ज्ञान नहीं होता, अत: अपने-आप कोई भी जड़ वस्तु कुछ भी नहीं कर सकती। चेतन के द्वारा ही इन भूतों (जड़ वस्तुओं) का व्यवहार-प्रयोग होता है।

आप स्वयं ही विचारिये कि क्या घर में रखी कुर्सी-टेबल उठकर आपको मार सकती है? क्या टी.वी. बिना चलाए अपने-आप चल सकता है? क्या बिना पकाए चावल-दाल पक सकती है? बिना आपको चलाए गाड़ी चल सकती है? **उत्तर होगा**- जी नहीं। जब तक जड़ वस्तु को चलानेवाला चेतन (परमात्मा या जीवात्मा) तत्त्व उपस्थित नहीं होगा, ये जड़ चीजें, कुछ नहीं कर सकतीं। एक बात और ध्यान में रखने योग्य है कि बिना शरीर धारण किये भी आत्मा कुछ नहीं कर सकता। ईश्वर चेतन है, परन्तु वह सर्वव्यापक और सर्वज्ञ होने से बिना शरीर के ही अल्पज्ञ है, अत: उसे कर्म करने के लिए शरीर की आवश्यकता पड़ती है जिसकी पूर्ति परमात्मा करता है।

अंधविश्वास : 40 : लोगों का मानना है कि 13 नंबर (Unlucky) अशुभ होता है।

निर्मूलन : इसका तो यह मतलब हुआ कि तेरह नं॰ को गणित से निकाल देना चाहिए। है ना? या फिर 13 से ऊपर गिनती करना ही ग़लत है।

नं॰ 13 नहीं मानें तो 14-15-16 नं॰ कैसे हो सकते हैं? इतनी सारी बिल्डिगें बनती हैं जो 100 मंजिली भी होती हैं। फिर 13 माला न होने पर शेष मंजिलों का आधार किस पर होगा? संसार में 113 माले की बिल्डिंगें भी हैं। उनमें तो 13 और 113 दोबारा गिनती में आया है और वे बिल्डिंगें सही-सलामत खड़ी हैं और आबाद हैं। जब बच्चा 13 दिन का होता है, या तेरह महीने अथवा तेरह साल का होता है तो क्या उस दिन को अशुभ माना जाता है? उस बच्चे का जन्मदिवस नहीं मनाते?

13 के ऊपर जितने भी नंबर हैं, सब 13 के ऊपर ही टिके हैं। इसे अशुभ मानना कोई समझदारी नहीं है। क्या तेरहवीं मंजिल पर कोई नहीं रहता? हर महीने 13वीं तारीख आती है, क्या वह अशुभ होती है? क्या उस दिन में बच्चे पैदा नहीं होते? या जितने बच्चे पैदा होते हैं वे सब अशुभ होते है? 13 तारीख को जन्मे कई व्यक्ति बहुत धनवान है एवं स्वस्थ भी हैं। इससे सिद्ध होता है कि 13 तारीख अशुभ नहीं होती।

thearyasamaj.org

क्या उस दिन में हम खाते-पीते नहीं हैं? क्या तेरह तारीख को सफर नहीं करते? ये सब ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर केवल हाँ में ही होता है।

हो सकता है कुछ लोगों ने 13 नं० को अशुभ बताकर अपना उल्लू सीधा कर लिया हो। या हो सकता है इन वहमों का धंधा मंदा पड़ गया हो और 13 तारीख को अशुभ बताकर पूजापाठ करके उसे शुभ बनाने की तरकीब बताकर धंधे का इज़ाफ़ा किया हो। तेरहवें माले पर कोई न आवे-ऐसी घोषणा कर दी गई होगी कि इस माले पर जो जाता है उसे भूतप्रेत का साया लग जाता है। सीधे-सादे किसी व्यक्ति को मारा गया होगा या उन लोगों का पर्दाफाश होने के डर से उस व्यक्ति को मार दिया गया होगा। नाम बदनाम हुआ तेरहवीं मंजिल का।

भाइयों और देवियो। कोई नंबर, कोई दिन या कोई स्थान खराब नहीं होता। वहाँ रहनेवाले लोग बुरे हो सकते हैं। 13 नंबर में कोई बुराई-खराबी नहीं है। इस प्रकार के वहम को, भ्रान्ति को मन से निकाल देना चाहिए।

मकान नं. 13, दुकान नं. 13, रोड नं. 13, बिल्डिंग नं. 13, वार्ड नं. 13, हर क्षेत्र में नं. 13 होता ही है। विद्वज्जन निर्णय करें कि क्या 13 नं. अशुभ है? अधिक जानकारी के लिए किसी विद्वान से संपर्क करें। वहमों के चक्कर में न फँसें।

शुभ-अशुभ तो मनुष्य के कार्य होते हैं। जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। न अधिक न कम।

13 नं. अशुभ है तो 13x2 उससे भी अधिक भयानक होगा और इसी प्रकार जितना आगे बढ़ते जाओगे- अशुभ ही अशुभ होगा। क्या ऐसा संभव है? 13x13 तो सबसे ज्यादा अशुभ होगा- ऐसा कभी विश्वास न करें। 13 नं. को देश-विदेश में अशुभ माननेवालों की कमी नहीं है। धीरे-धीरे लोग समझने लगे हैं। सत्य हमेशा सत्य ही होता है।

'धनतेरस' का दिन धन-वृद्धि के लिए प्रसिद्ध है जो कि दिवाली से दो दिन पहले होता है। लोग सोने-चाँदी की वस्तुएँ खरीदते हैं कि यह दिन शुभ होता है, धन की वृद्धि होती है। यह भी 13वीं तिथि है- नं. 13 है, तब इसे शुभ क्यों मानते हैं? सब दिन ईश्वर के बनाए हैं- सभी शुभ ही होते हैं।

अंधविश्वास : 41 : भूत-प्रेत अँधेरे में रहते हैं और रात के अँधेरे में ही अपना कार्य करते हैं।

निर्मूलन : चोर-डाकू जो नीच कर्म करते हैं वे ही अँधेरे में रहते हैं और इन लोगों का कार्य अँधेरे में ही होता है क्योंकि हर बुरा कार्य पर्दे के पीछे अँधेरे में ही होता है। दुष्कर्म, नीच काम

thearyasamaj.org

करनेवाले ही इन भूत-प्रेतों का नाम बदनाम करते हैं। जिन भूत-प्रेतों का प्रायः तसव्वुर (ध्यान) करते हैं, होते ही नहीं। ये सब खयाली चीज़ें हैं जिनका कोई अस्तित्व नहीं होता।

चोर चोरी करता है अँधेरे में- डाकू डाका डालता है अँधेरे में। जो कार्य अँधेरे में छुप-छुपाकर होता है, वह अशुभ ही होता है। जो कार्य सबके सामने खुले-आम होता है, जिस कार्य करने में भय-लज्जा-शंका नहीं होती-वह शुभकर्म होता है।

जो ये कहते हैं कि भूत-प्रेत अँधेरे में रहते हैं, हो सकता है उनका किसी ऐसे टोले से वास्ता होगा, तभी तो उनको अधिक खबर रहती हैं। अँधेरा नाम है अज्ञानता का और प्रकाश नाम है ज्ञान का। अँधेरे की बातें अज्ञानी लोग ही करते हैं, और जो प्रकाश की बातें करते हैं वे ज्ञानी होते हैं।

अंधविश्वास : 42 : किसी का भी खण्डन नहीं करना चाहिए। इसे करके आपस में दूरी हो जाती है- एकता नहीं रहती।

निर्मूलन : सत्य बात की पुष्टि करना सबका धर्म-कर्तव्य है। जो ऐसा नहीं करता-पाप करता है। सभी खंडन करते हैं, तभी तो सुधार होता है। उदाहरण के तौर पर हम कोई चीज खरीदने बाजार जाते हैं। अनेक वस्तुओं को देखकर हटा देते हैं और जो हमें सही लगती है वही खरीदते हैं। अब जो वस्तुएँ हमने नहीं खरीदीं तो क्या यह खंडन नहीं हैं? हम कपड़ा खरीदने जाते हैं तो जो हमें अच्छा नहीं लगता हम नहीं खरीदते, भले ही दूकानदार उस कपड़े की दसियों विशेषताएँ बताए। वहीं खरीदते हैं जो हमारे अनुकूल होता है। भाजियाँ खरीदते हैं तो देखभाल कर अच्छी ही खरीदते हैं- जो सड़ी-गली होती है उसे हटा देते हैं। अब बताइये- जो अच्छी वस्तु है उसे ही खरीदने में समझदारी है या जो कुछ दूकानदार कहे वही लेना चाहिए?

धर्म के बारे में भी ऐसा ही है। ईश्वर ने सबको बुद्धि प्रदान की है। जो उसका प्रयोग करता है उसकी बुद्धि सूक्ष्म होती है, अर्थात् उसका विवेक जागृत हो जाता है। विवेक से ही तर्क-वितर्क करके परख सकते हैं और वेद की कसौटी पर निर्णय कर सकते हैं। सत्य-असत्य का बोध तो परखने से ही होता है। विवेक से ही पाप-पुण्य का भेद मालूम पड़ता है, क्या इसको हम खंडन-मंडन कहते हैं? जो वस्तु जैसी है उसे उसी रूप में प्रस्तुत करना ही धर्म है- यह खण्डन नहीं।

ईश्वर निराकर है- सभी जानते हैं, परन्तु मानते नहीं। वे मूर्ति की पूजा करते हैं- ईश्वर के स्थान पर पाषाण की पूजा कहाँ की समझदारी है? इसके बारे में अगर बताया जाए

thearyasamaj.org

तो उसे आप खण्डन कहेंगे? जी नहीं।

झूठी बात को सही कहना खंडन नहीं, मंडन है। गलत बात को गलत प्रमाणित करके उसे ठीक कहना, इसे आप खंडन-मंडन कह सकते हैं, परन्तु जो सत्य है वह कभी छुप नहीं सकता। पहले खंडन करना पड़ता है, फिर मंडन हो सकता है। खंडन किये बिना मंडन नहीं हो सकता। जैसे सब्ज़ियाँ छाँटते हैं, काटते हैं, फिर उसे पकाते हैं। कपड़ा काटा जाता है- नापकर बनाया जाता है, तभी उसकी फिटिंग अच्छी और बराबर आती है।

धर्म के सिद्धान्तों को परखकर, जो-जो बातें विरुद्ध हों उनको त्याग देना ही उचित है; और जो-जो बातें वेद के सिद्धान्तानुसार हों उनको ही अपनाना चाहिए। कोई अनाड़ी इसको खंडन कहे या मंडन, परन्तु जो सही है उसी को व्यवहार में लाना सच्चा धर्म है।

जो झूठ का प्रचार करके उसकी कमाई खाता है वह मानो झूठ ही खाता है। ऐसी कमाई पचती नहीं है। ऐसे लोगों का सर्वनाश निश्चित है। झूठ की कमाई पहले तो अच्छी लगती है परन्तु उसका परिणाम बहुत खराब होता है। सच की कमाई भले ही पहले थोड़ी-सी होती है, परन्तु उसका परिणाम सदाबहार होता है। जो लोग धर्म के नाम पर अधर्म का प्रचार कर अपनी दूकानें फैलाते जा रहे है, उनका परिणाम केवल सर्वनाश ही है। इन लोगों का पर्दाफाश करना ही धर्म है, इसमें कोई पाप लगने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। जो लोग अधर्मी लोगों को प्रोत्साहन देते हैं- ऐसे अधर्मियों का कार्यक्रम आयोजित करते हैं, वे भी पाप के भागी होते हैं। जो केवल धन के लालच में बहे जा रहे हैं, उन अधर्मियों को कुमार्ग से बचाना धर्म के जाननेवालों का कर्त्तव्य बनता है।

अतः खंडन-मंडन से ही धर्म सुरक्षित है। हाँ, बिना कारण किसी भी प्राणी को दुःखी करना सर्वथा अधर्म है।

अंधविश्वास : 43 : भय लगे तो 'हनुमान चालीसा' पढ़ना चाहिए।

निर्मूलन : आप ही सोचें- डर के समय मुसलमान क्या करेगा? ईसाई क्या करेगा? सिक्ख क्या करेगा? संसार में अनेक देश हैं, यहाँ के लोगों को डर लगेगा तो वे क्या करेंगे?

जो मान्यताएँ कुछ ही लोगों की होती हैं उनको सबके लिए स्वीकार नहीं किया जा सकता। सभी को कभी न कभी किसी न किसी कारण डर लगता है, तो क्या सभी 'हनुमान चालीसा' पढ़ते हैं?

वास्तव में डर के समय अगर अपने मन को दूसरे किसी कार्य में लगाया जाए तो डर नौ दो ग्यारह हो जाता है। समझ लो जंगल में जा रहे हैं और सामने शेर आ जाए तो स्वाभाविक है

thearyasamaj.org

डर लगेगा। वहाँ हनुमान चालीसा पढ़ेंगे तो शेर का आक्रमण तो होगा ही, साथ ही साथ उसे स्वादिष्ट भोजन भी प्राप्त हो जाएगा। समझदारी तो इसी में है कि उससे बचने का उपाय करें।

हनुमान चालीसा रटने से संकट नही टलता। उस पर विचारे- व्यवहार में लाने का प्रयास करें। हनुमान चालीसा में हनुमान (श्री रामचन्द्र के परमभक्त) जी की महिमा बताई गई है- गुणगान किया गया है। हनुमान जी के गुणों को अपना सकें तो निश्चित ही लाभ होगा। ग्रन्थों को पढ़ने से शाब्दिक ज्ञान अवश्य बढ़ता हे, जबकि उस पर विचार कर व्यवहार में लाने से जीवन सँवरता है।

भय के कारण का निराकरण करने से ही भय पर विजय प्राप्त की जा सकती है। भय होता है अज्ञानता के कारण या शक्ति आदि की कमी से, अतः कारण को ही खत्म कर दिया जाए तो भय से छुटकारा पाया जा सकता है।

अंधविश्वास : 44 : 'दाने-दाने पर लिखा है खानेवाले का नाम।

निर्मूलन : होटलों में खाना पकता है और अगर हर दाने पर खानेवाले का नाम लिखा है, तब तो होटल के वेटर को ऑर्डर करने से पहले ही खाना लाकर सामने रख देना चाहिए। जो लोग ऐसा मानते हैं उनसे एक प्रश्न करना चाहिए कि कौन-सी भाषा में खानेवाले का नाम लिखा होता है? इसका तात्पर्य तो यह भी निकाला जा सकता है कि किसी खूँखार जानवर ने किसी इन्सान को पकड़कर खा लिया, क्योंकि उस मरनेवाले इन्सान के ऊपर खानेवाले का नाम लिखा था। एक बंदर ने आपके हाथों में से रोटी का टुकड़ा छीन लिया और खा गया, फिर आप बंदर को भगाते क्यों हैं? कुत्ते ने परोसे हुए खाने को मुँह मारा-कुछ खा लिया-तो क्या बाकी खाने को आप खा लेंगे? जितना खाना कुत्ते के नाम का था उसने खा लिया, अब बाकी खाना किसके नाम का है? कुत्ते को आप मार भगाते हैं, क्यों? प्रिय पाठकगण! किसी भी दाने पर खानेवाले का नाम या निशान नहीं होता। यह तो घर में आए अतिथि को प्रसन्न करने के लिए कहते हैं कि आपका ही नाम लिखा था। मान लो- घर में अतिथि तीन-चार आ जाते हैं और खाना एक का है तो क्या करेंगे? खाना सामने रख लो और कहो कि आप स्वयं ही देख लो कि किसका नाम लिखा है। क्या ऐसा संभव है? नहीं जीव कर्म करने में स्वतंत्र है- वह खाना खाए या नहीं खाए या केवल पानी पिये- इसका फैसला वे ही कर सकते। अगर भूख है और खाना उपलब्ध है तो व्यक्ति खाना खा ही लेता है, और भूख है-खाना उपलब्ध नहीं है तो भूखा भी रहना पड़ता है। इन हालात में क्या ऐसा भरोसा कर सकते हैं कि हमारा नाम किसी भी दाने पर नहीं लिखा?

'दाने-दाने पर खानेवाले का नाम' केवल दिल्लगी का मुहावरा है।

शेष अगले अंक में...

thearyasamaj.org

!! ओ३म्!!

" यदि ईश्वर वेद ज्ञान न देता तो मनुष्य पशुवत ही रह जाता"

खुशहाल चन्द्र आर्य, कोलकाता

ईश्वर ने मनुष्य के सहयोग के लिए जिससे वह अपना जीवन सुचारू रूप से चला सके, इस उद्देश्य से सृष्टि की रचना दी जिसमें सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, जल, वायु, समुद्र, नदी-नाले, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि बनाए। सृष्टि रचने के बाद ईश्वर ने तिब्बत के पठार पर एक कृत्रिम गर्भाशय बनाकर, उसमें रज-वीर्य का समावेश करके युवा लड़के-लड़कियाँ उत्पन्न की जिससे आगे भी सृष्टि चलती रहे। यदि ईश्वर मनुष्य उत्पत्ति के समय युवाओं को उत्पन्न न करके यदि बच्चे या वृद्ध पैदा करता तो बच्चों का पालन-पोषण कौन करता? और वृद्धों से आगे का संसार नहीं चलता। इसीलिए नवयुवक व नवयुवतियाँ उत्पन्न की। ईश्वर ने मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अँगीरा था, जिनके धर्म सर्वोत्त्म होने से पुण्य आत्माएँ थी, उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, समवेद व अथर्ववेद हैं। इनको उनके मुख से उच्चारित करवाया। वैसे ये वेद, ईश्वरीय ज्ञान है, ऋषियों के मुख से तो केवल उच्चारित ही करवाया है। जैसे माईक में मनुष्य बोलता है, माईक तो केवल उसकी आवाज को तेज आवाज में प्रसारित कर देता है। ठीक उसी प्रकार ईश्वर, वेद ज्ञान को ऋषियों के हृदय में प्रकाशित कर देता है और ऋषियों ने उस ज्ञान को अपने मुख से उच्चारित करके सब मनुष्यों के सामने प्रकट कर दिया। वैसे तो वेद ज्ञान उपस्थित सभी लोगों ने सुना, पर ब्रह्मा ऋषि जो सबसे अधिक प्रखर और तीव्र बुद्धि वाले थे, उन्होंने वेद ज्ञान को सुन कर कण्ठस्थ कर लिया और फिर वे उपस्थित लोगों को सुनाने लगे। उपस्थित लोग अपने पुत्र व पौत्रों को सुनाने लगे। इस प्रकार यह परम्परा लाखों, करोड़ो वर्ष तक चलती रही। जब कागज, स्याही, कलम, दवात का अविष्कार हो गया तो यह चारों वेद लिपिवद्ध कर दिये गये। तब से अभी तक चले आ रहे हैं। इसीलिए वेदों का दूसरा नाम श्रुति भी यानी सुनकर व सुनाकर चलने वाला ज्ञान। मैं यहाँ यह लिखना अति आवश्यक समझता हूँ कि वैदिक धर्म की महानता यह है कि यह ईश्वरीय ज्ञान होने से मानव-मात्र का धर्म है। इसमें मानव-मात्र के लिए ही नहीं बल्कि प्राणी-मात्र के लिए भी कोई भेद-भाव या कोई छोटा-बड़ा नहीं है कारण ईश्वर सब का पिता है और सब जीव उसके पुत्रवत् हैं इसलिए

thearyasamaj.org

किसी प्रकार का भेद-भाव होने का प्रश्न ही नहीं उठता। बांकी जितने भी मत, पंथ, सम्प्रदाय हैं जिनको धर्म भी कहा जाता है, वे सब मनुष्यों के बनाए हुए हैं। मनुष्य चाहे कितना भी महान् क्यों न हो, परन्तु मनुष्य होने के नाते अल्पज्ञ प्राणी है। उसमें अपना और पराये का भेदभाव कम या अधिक आवश्य रहेगा। इसीलिए अन्य जितने भी मत, पंथ व सम्प्रदाय हैं, वे अपने ही मानने वालों का पक्ष लेते हैं यानी उनके ही हित चिन्तक हैं, दूसरों के नहीं। पर वैदिक धर्म ही एक मानवीय धर्म है जो सब के लिए समान है।

इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए यह लिखना उचित है कि ईश्वर ने मनुष्य को पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ दी हैं, उनके लिए ईश्वर ने पाँच जड़ देवता जिनको तत्त्व भी कहते हैं दिये हैं। जिनके द्वारा ज्ञानेन्द्रियों में वह शक्ति आती है जिससे वे अपना काम कर पाती है। जैसे आँखों के लिए ईश्वर ने जड़ देवता अग्नि बनाया है जिससे आँखें रूप देख पाती है। इसी प्रकार ध्वनी के लिए आकाश बनाया है जिससे ध्वनी शब्दों को सुनता है। नाक के लिए पृथ्वी बनाई है जिससे नाक ग्रन्ध या दुर्गन्ध का ज्ञान करता है। जिहवा के लिए ईश्वर ने जड़ देवता पानी बनाया है जिससे वह रस का अनुभव कर सके। त्वचा के लिए हवा बनाया है जिससे त्वचा स्पर्श का अनुभव कर सके। यह पाँचों तत्व ईश्वर मनुष्य की उत्पत्ति से पहले ही बना देता है। मनुष्यों में एक इन्द्रि और होती है जिसे बुद्धि कहते हैं। यह मनुष्यों में अन्य जीवों से अधिक होती है। इस बुद्धि के लिए ईश्वर ने वेद ज्ञान दिया है जिसके पढ़ने व सुनने से बुद्धि में ज्ञान की वृद्धि होती है और वेद ज्ञान से बुद्धि यह समझ पाती है कि मुझे क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए। वेद ज्ञान, मनुष्य का बुद्धि के द्वारा पथ-प्रदर्शन करता है जिससे वह अच्छे व पुण्य कार्यों को करता हुआ मोक्ष की ओर अग्रसर होता है, जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है यह मनुष्य योनि में ही प्राप्त होता है। जैसे एक वैज्ञानिक कोई मशीन बनाता है, तो उसका कैसे प्रयोग किया जावे इसके लिए वह प्रयोग करने की विधि या तरीका एक छोटी पुस्तक में लिख देता है जिसको देखकर उस मशीन का प्रयोग करने वाला प्रयोग करता है, इसी प्रकार ईश्वर ने मनुष्यों की उत्पत्ति के साथ ही यह वेद ज्ञान दे दिया जिसको पढ़कर या सुनकर अपने व दूसरों के जीवन को सुचारू रूप से चला सके और अन्त में मोक्ष को प्राप्त कर सके।

यहाँ आपको यह बताना बहुत जरूरी है कि जीवों में दो किस्म का ज्ञान होता है। एक स्वभाविक दूसरा नौमित्तिक। स्वाभाविक ज्ञान पशु-पक्षियों में अधिक होता है कारण उनको इसी ज्ञान से पूरा जीवन व्यतीत करना होता है।

thearyasamaj.org

इस ज्ञान से जीव खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना तथा बच्चे पैदा करना ही नित्य कर्म कर सकता है, इससे जीव को कोई फल नहीं मिलता। नैमित्तिक ज्ञान वह होता है जो सीखने से सीखा जाये। यह ज्ञान पशु-पक्षियों में बहुत कम और मनुष्यों में बुद्धि अधिक होने के कारण यह ज्ञान भी अधिक होता है। कारण इस ज्ञान का बुद्धि से सम्बन्ध है। आप देखते होंगे कि कुत्ता का बच्चा पैदा होते ही पानी में तैरने लग जाता है कारण यह कुत्ते के लिए स्वभाविक ज्ञान है। पर मनुष्य का बच्चा, पैदा होते ही पानी में नहीं तैर सकता। यदि पानी में छोड़ेंगे तो वह डूब जायेगा और जब तक उसको तैरना सिखाया नहीं जायेगा तब तक वह पानी में नहीं तैर सकेगा कारण यह मनुष्य के लिए नैमित्तिक ज्ञान है।

मनुष्य का स्वभाविक ज्ञान, खाने-पीने, सोने-जागने, उठने-बैठने तक ही सीमित है। बांकी काम वह सीखने से सीखता है। स्वभाविक ज्ञान के कार्यों में मनुष्य को भी फल नहीं मिलता, बांकी नैमित्तिक ज्ञान के किये हुए अच्छे या बुरे कार्यों का ईश्वर मनुष्य को अच्छे कार्यों का सुख के रूप में, बुरे कार्यों का दुःख के रूप में फल देता है। मनुष्य की पढ़ाई, लिखाई सब नैमित्तिक ज्ञान से होती है। इसलिए ईश्वर ने मनुष्य को अपना तथा दूसरों के जीवन को सुखी व उन्नत बनाने के लिए उसे क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए। इसलिए ईश्वर ने मनुष्य की उत्पत्ति करते ही, उसे चार ऋषियों द्वारा चार वेदों का ज्ञान दे दिया। जिनको सुनकर या पढ़कर वह अपने जीवन को, शुभ कार्यों को करते हुए उत्तरोत्तर उन्नत व समृद्ध शाली बना सके, साथ ही अष्टांग योग द्वारा यम, नियमों को जीवन में धारण करते हुए, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्याण को करते हुए समाधि का आनन्द ले सकें और मृत्यु के बाद मोक्ष के परम आनन्द को ईश्वर के सान्निध्य में रहते हुए प्राप्त कर सकें जो जीव का अन्तिम लक्ष्य है। इसके बाद मनुष्य की कोई इच्छा बांकी नहीं रह जाती है यानी यह मनुष्य की अन्तिम इच्छा है। यदि ईश्वर प्रारम्भ में ही मनुष्यों को वेद ज्ञान नहीं देता, तो मनुष्य भी अन्य पशु-पक्षियों की भाँति असभ्य रूप में रहता हुआ पशुवत् ही अपना जीवन व्यतीत करता है। इसलिए सभी मनुष्य को अभिष्ट है कि वह वैदिक धर्म को अपनाकर अपने व अन्यों के जीवन को उन्नत व सफल बनावे।

thearyasamaj.org

औचित्य क्या है?

सारस्वत मोहन मनीषी, दिल्ली

जहाँ पर प्रशंसा नहीं पीठ ठोके,
वहाँ व्यर्थ मरने का औचित्य क्या है?
जहाँ मात्र षड्यन्त्र कुण्ठा-घुटन हो,
वहाँ कार्य करने का औचित्य क्या है?
जहाँ जिन्दगी बन्धुआ बन गई हो,
जहाँ बन्दगी पर खड़े लाख पहरे।
जहाँ खूब व्याख्यान देते हो गूंगे,
बजा तालियाँ झूम सुनते हों बहरे।
जहाँ सिन्धु खुद ही नदी को लताड़े,
वहाँ प्राण धरने का औचित्य क्या है?
जहाँ न्याय का सिर्फ नाटक 'मनीषी',
वहाँ सत्य कहने का औचित्य क्या है।
जहाँ पर सवेरे अँधेरों को पाले,
किरण सौंपती हो बदन बारिशों को।
भुजंगो-मलंगों की संख्या बढ़ेगी,
सुमन पालते हों जहाँ साजिशों को।
सजन के नयन में बसा और कोई
तो सजने- सँवरने का औचित्य क्या है?
न परवाह करता कोई रूठने की,
तो बँधने-बिखरने का औचित्य क्या है?
वहाँ पर किनारे करें क्या बताओं,
नदी खुद जहाँ बाढ़ की नयौतती हो।
पसीने को पीड़ा की पायल मिलेगी,
जहाँ पर दवा ही छुरा घोंपती हो।
लहर परकहर का नशा छा रहा हो,
वहाँ मृत्यु वरने का औचित्य क्या है?
जहाँ बाढ़ का आगमन नित्य निश्चित,
वहाँ नीड़ रचने का औचित्य क्या है?
जहाँ शिव व शव में न अन्तर हो कोई,
वहाँ शक्ति अपना वचन तोड़ देगी।
उमा के सपन तब अधूरे रहेंगे,
जहाँ दृष्टि शंकर की तप छोड़ देगी।
जहाँ मान-सम्मान भस्मासुरों का
वहाँ ताल भरने का औचित्य क्या है?
जहाँ सूर्य काला धुआँ छोड़ता हो,
वहाँ मन्त्र जपने का औचित्य क्या है?
जहाँ कोठियाँ नाग महलों का स्वागत,
वहाँ पैदलों का तिरस्कार होगा।
मुझे आज तक उस दिवस की प्रतीक्षा,
हँसे झोपड़ीअश्रु अंगार होगा।
जहाँ शब्द से अर्थ ही लड़ रहा हो
वहाँ गीत जनने का औचित्य क्या है?
जहाँ अर्थ-शुचिता सिसकती-तड़पती
वहाँ पर ठहरने का औचित्य क्या है?

thearyasamaj.org

आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जी का आर्यों के नाम संदेश

ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रापि भवतु।

28 अक्टूबर से 12 नवम्बर 2014 तक सिंगापुर, बैंकाक, मलंये, शिया देशों की यात्रा की। यद्यपि 2 वर्ष पूर्व मैंने इन देशों की यात्रा की थी, किन्तु सा. आ. प्र. सभा के उप प्रधान मान्य सुरेशचन्द्र जी के विशेष आग्रह पर तथा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन के कारण पुनः यात्रा का कार्यक्रम बना लिया। सम्मेलनों में 300 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसमें, U.S., U.K., CANADA, AUSTRALIA, MURITIUS आदि अनेक देशों के आर्य सज्जन भी सम्मिलित हुए। सिंगापुर आर्य समाज की स्थापना को 100 वर्ष हो गये तथा बैंकाक आर्य समाज को 75 वर्ष। हजारों किलो मीटर दूर देशों में जब वैदिक आर्य परम्परा वाले व्यक्तियों, परिवारों, समाजों को प्रत्यक्ष देखते हैं तो हृदय में आनन्दातिरेक की अनुभूति होती है। कुछ छोटी-छोटी अव्यवस्थाओं को छोड़कर सम्मेलन सफल रहा।

पाश्चात्य और पौर्व्य विकसित देशों की बाह्य चकाचौंध करने वाली भौतिक प्रगति को देखकर अधिकांश व्यक्ति प्रभावित होते हैं और वैसा ही बनने का विचार करते हैं, प्रयास भी करते हैं किन्तु सूक्ष्म दार्शनिक दृष्टि न होने के कारण वे आन्तरिक स्थिति का अवलोकन नहीं कर पाते हैं और भ्रान्त धारणा बन जाती है कि ये सुखी हैं, शान्त हैं, सन्तुष्ट हैं। किन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं हैं। बिना आत्मा-परमात्मा को जाने, सच्चे वैदिक ज्ञान के अनुरूप अपने जीवन को चलाये बिना मनुष्य कितनी ही धन सम्पत्ति प्राप्त क्यों न करले, पूर्ण सुखी नहीं हो सकता। दुःखों से घिरा रहता है।

वैदिक ऋषियों ने ईश्वर का ध्यान, आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, सत् पुरूषों का संग, पुनर्जन्म, कर्मफल, समाधि, वैराग्य, व्रत, तप, संयम आदि आध्यात्मिक विषयों तथा सिद्धांतों को ''सांपराय'' शब्द से इंगित किया है, जो मनुष्य इन विषयों का ज्ञान और तत्सम्बन्धी आचरण नहीं करते हैं वे ''मूढ'' संज्ञक मनुष्य होते हैं, ऐसे मनुष्यों की मान्यता यह होती है कि ''This is the first and last life, There was no life before this life and there will be no life after this life.'' यही जीवन है, न इससे पूर्व जन्म था, न मरने के पश्चात् होगा। अपने इस चार्वाक्/विरोचन/नास्तिक वादी सिद्धान्त के कारण अपनी बुद्धि, शक्ति, साधन, समय, चातुर्य, श्रम का पूर्ण रूप से इसी जीवन को, अधिकाधिक सामर्थ्यवान्, बनाकर अधिकाधिक भागों को भोगने का प्रयास करते हैं और इस एकांगी क्षेत्र में वे सफल हो जाते हैं।

thearyasamaj.org

किन्तु इस जीवन के बाद सर्वथा विनाश है, अन्धेरा ही अंधेरा है, दुःख ही दुःख है।

जब किसी व्यक्ति-समाज-राष्ट्र का जीवन का लक्ष्य ही भिन्न होगा, तो दिशा भी भिन्न होगी, मार्ग भी भिन्न होगा, साधन के रूप, रंग, आकृति, बल, बुद्धि, सामर्थ्य, पद, प्रतिष्ठा, भैतिक, सम्पत्ति, ऐश्वर्य आदि को देखकर यह नहीं मान लेता कि ये पूर्ण सुखी है, शान्त है। पूर्ण सुखी होने की कुछ कसौटियां हमारे ऋषियों ने निर्धारित की हैं, यदि व्यक्ति उन कसौटियों पर खरा उतरता है, तो वह सुखी हो सकता है, यदि उन पर व्यक्ति उत्तीर्ण नहीं होता है, तो वह निश्चित् रूप से अशान्त, चिंतित, भयभीत, दुःखी रहता है, चाहे बाह्य लक्ष्णों से दिखाई न दे।

प्रेम मार्ग के पक्षिक, चाहे पश्चिम में हों या पूर्व में या अपने देश में, ये बिना श्रेयमार्ग के सिद्धांत, शैली को अपनाये, पूर्ण सुखी हो ही नहीं सकते हैं, चाहे कितनी ही भौतिक उन्नति क्यों न कर लेवें। सच्चे ईश्वर तथा ईश्वराज्ञा को न मानने वाला व्यक्ति, असामान्य/प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अन्य व्यक्ति/परिवार/समाज/राष्ट्र का अहित करने को समुधत हो जाता है। जिन मनुष्यों को अन्तः करण में ईश्वर के अस्तित्व का बोध नहीं होता है, अथवा जो, शब्द प्रमाण वा अनुमान प्रमाण से ईश्वर को स्वीकारते तो हैं, किन्तु व्यवहार में ईश्वराज्ञा के विरूद्ध आचरण करते हैं, उनकी भी आत्मा में परमात्मा का प्रकाश विलुप्त हो जाता है। ऐसे व्यक्ति बुरे कामों को करते समय, ईश्वर की ओर से भय, शंका तथा लज्जा-स्वरूप संकेतों का ग्रहण नहीं कर पातें हैं और वे स्वच्छंद होकर, निर्लज्ज होकर, पाप-अपराधों को करते रहते हैं।

हे परमेश्वर! हम अपने से निम्न स्तर के मनुष्यों को देखकर खिन्न होते हैं, घृणा-ग्लानी करते हैं, किन्तु इससे क्या लाभ? जब आत्मनिरीक्षण करते हैं तो स्वयं में भी अनेक अवगुण, दिखाई देते हैं। अवगुण न हों या न्यून हों, फिर भी अन्यों के दोषों को दूर करने का साहस, उत्साह, पराक्रम हमारे में नहीं है। ये साहस, बल, पराक्रम आदि गुण तब तक पूर्णरूप से नहीं उभरेंगे, जब तक हम स्वयं दोष रहित नहीं होंगे। इसलिए अब तो हमारी आपसे यही प्रार्थना है कि सर्व प्रथम हमारे समस्त दुर्गुणों को विनष्ट कर दो और समस्त भद्र गुणों से हमें युक्त होकर न केवल अपने आर्यावर्त्त की, अपितु सम्पूर्ण विश्व की अवैदिक परम्पराओं को समाप्त करके, उनके स्थान पर विशुद्ध वैदिक शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता, खान-पान, आचार-विचार वाली गौरवमयी-अस्मिता की स्थापना करने में समर्थ हो जायेंगे और आपका "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का आदेश पूरा कर देंगे, इसी आशा विश्वास के साथ- ज्ञानेश्वरार्य :

thearyasamaj.org

!! ओ३म् !!

शिक्षा की समस्याएं वैदिक समाधान

ब्रह्मचारी सत्यनिष्ठा से मृत्युविजयी होते हैं

डा. अशोक आर्य, कौशाम्बी, गाजियाबाद

ब्रह्मचारी अपने तप के बलपर सत्यनिष्ठ होकर सत्यनिष्ठ ग्यानी व्यक्ति मृत्यु पर विजय पाने में सक्षम होते हैं। ब्रह्मचारी पर प्रकाश डालते हुए तथ्य को अथर्ववेद के अध्याय 11 सूक्त 15 के मन्त्र संख्या 19 में इस प्रकार उपदेश किया गया है :-

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्व० राभरत
॥ अथर्ववेद 11.04.19॥

मन्त्र उपदेश करते हुए बता रहा है कि ग्यानी लोग, जिन्हें हम सत्यनिष्ठ लोग भी कह सकते हैं, ब्रह्मचर्य और तप, इन दो शब्दों पर विशेष बल दिया गया है। प्रथम शब्द ब्रह्मचर्य का प्रयोग किया गया है। इसलिए आओ हम सर्व प्रथम यह जानने का यत्न करें कि ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचर्य किसे कहते है :-

ब्रह्मचर्य अथवा ब्रह्मचारी

ब्रह्म का अर्थ है ज्ञान - परमपिता परमात्मा का दिया गया ज्ञान। हम जानते हैं कि जो ज्ञान परमपिता पारमात्मा ने प्राणी मात्र के कल्याण के लिए दिया गया था। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि क्योंकि यह ज्ञान सृष्टि के आदि में दिया गया था, इस लिए इस ज्ञान का इस सृष्टि के सब ज्ञानों में सब से प्राचीन होना भी आवश्यक है तथा सृष्टि के सब ज्ञानों का स्त्रोत भी यह ज्ञान ही है। इस मानक के अनुसार जब हम प्राचीनतम ज्ञान की खोज करते हैं तो हम पाते हैं कि इस सृष्टि के प्राचीनतम ज्ञान का नाम 'वेद' है। वेद से प्राचीन पुस्तक इस सृष्टि में अन्य कोई नहीं होने के कारण हम वेद को ही प्राचीनतम ज्ञान मानते हैं। इस सम्बन्ध में ईसाई मत का धर्म ग्रन्थ बाईबल भी इस बात की पुष्टि करते हुए कहता है कि **"इस सृष्टि के आरम्भ में शब्द था। यह शब्द प्रभु का दिया हुआ था। यह शब्द प्रभु का आदेश था। यह शब्द सदा रहने वाला होने के कारण कभी नष्ट नहीं होता।"..... जब हम बाईबल के इस सन्देश का विश्लेषण करते हैं तो हम पाते हैं कि " यह भी वेद रूपी ज्ञान की ही चर्चा कर रहा है। "** बाइयह शब्द अर्थात् यह ग्यान रूपी बल, यह परमपिता परमात्मा का दिया हुआ आदि ज्ञान ही वेद है। अतः ब्रह्म शब्द का अर्थ हुआ वेद।

ब्रह्म का अर्थ भली-भाति जान लेने के पश्चात्

thearyasamaj.org

हम इस स्थिति में आ गए हैं कि इस के दूसरे भाग चारी का भी कुछ विश्लेषण कर सकें। ब्रह्म का अर्थ तो है ज्ञान, यह हमने जान लिया। इस के दूसरे भाग चारी या चर्य का अर्थ है विचरण करने वाला अर्थात जो ब्रह्म में अर्थात-ईश्वर के दिए हुए वेद ज्ञान में विचरण करे अथवा इस ज्ञान को पाने का, जानने का यत्न करे उसे ब्रह्मचारी कहते हैं।

भारत की प्राचीन परम्परा के अनुसार जिस बालक को पिता यज्ञोपवीत संस्कार करके बाईस प्रकार के उपदेश वेदादि शास्त्रों की शिक्षा पाने के लिए घर से विदा कर गुरूकुल में गुरू चरणों में भेज देता था, उसे ब्रह्मचारी कहा जाता था तथा आज भी गुरूकुल में शिक्षा पाने वाले बालक को ब्रह्मचारी के नाम से ही जाना जाता है।

तप

ब्रह्मचारी के सम्बन्ध में जान लेने के पश्चात् आता है शब्द तप, जिसके सम्बन्ध में हमें जानकारी होना आवश्यक है। इस शब्द को समझने के पश्चात् ही हम इस मन्त्र के अगले भाग को समझ पाने के योग्य बन सकेंगे। तप शब्द अपने आप ही अपनी व्याख्या करता हुआ दिखायी देता है। तप के सम्बन्ध में हम जानते हैं कि तपाने को ही तप के नाम से जाना जाता है। किसे तपायें कि उसे तप कहा जावे। स्पष्ट है ब्रह्मचर्य से सम्बन्ध रखने वाले शब्द तप का भाव है ब्रह्मचारी के लिए तप। ब्रह्मचारी के लिए तप से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जो बालक गुरूकुल में प्रभु के दिए हुए ज्ञान को पाने गया है वह कठोर तपश्चर्या से ही इस ज्ञान को पा सकता है। जब तक वह अपने शरीर को याग, असान, प्राणायम आदि साधनों से तपाता नहीं, अनेक प्रकार के कष्ट सहन नहीं करता, तब तक वह इस शिक्षा को भली प्रकार पाने का सामर्थ्य नहीं रखता है। इसलिए यह आवश्यक है कि ब्रह्मचर्य में रहते हुए उसे अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना होता है, अनेक विध पुरूषार्थ करना होता है, प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर साधना करना होता है। गुरू की सेवा करना भी उसके लिए आवश्यक होता है। इस प्रकार के साधना पूर्ण जीवन में रहते हुए अंत में वह प्रभु का दिया हुआ, जो हमारे लिए जो कल्याणकारी ज्ञान वेद के रूप में जाना जाता है, उसे यह ब्रह्मचारी पा सकता है।

इस प्रकार ब्रह्मचर्य व तप से जो लोग सत्य निष्ठ अर्थात् सत्य में अगाध निष्ठा रखने वाले तथा ज्ञान के भंडारी लोग होते हैं। इस प्रकार के लोग मृत्यु से कभी भी भयभीत नहीं होते। यह लोग मृत्यु को वरदान मानते हैं तथा मृत्यु पर विजय पा लेते हैं। ऐसे लोगों को मृत्यु विजयी कहते हैं। इस प्रकार जो जीवात्मा है, वह

thearyasamaj.org

ब्रह्मचर्य में विचरण करते हुए सब प्रकार के इन्द्रियों के सुखों को प्राप्त सुखों से परिपूर्ण हो जाता है।

यह ब्रह्मचर्य ही है, जिससे प्राण, अपान, व्यानादि अर्थात् हमारे श्वास लेने, श्वास छोड़ने तथा श्वास बीच में ही रोक लेने की क्रिया के साथ ही साथ वाणी, मन, हृदय, ज्ञान, मेधा आदि अर्थात् हम उतम वाणी वाले बनते हैं, हमारा मन साफ व दूसरों का सहायक बनता है, हृदय में सदा उत्तम विचार ही आते हैं। हमारा ज्ञान भी ऐसा पवित्र होता है कि इसके प्रयोग से हममें विश्व के कल्याण की शक्ति आ जाती है। हमारी मेधा बुद्धि भी अच्छे बुरे में अंतर करने में सक्षम हो कर जन कल्याण में लग जाती है। इस प्रकार ब्रह्मचर्य के कारण हमने जिस ज्ञान को प्राप्त किया है, उस ज्ञान का हम केवल अपने हित के लिए ही प्रयोग नहीं करते अपितु दूसरों के हित को भी अपना ही हित मानते हुए उन में भी बाँटते हैं।

इस सब से विश्व के जितने भी दिव्य गुण हैं, उन सब ब्रह्मचारी के अंदर निवास हो जाता है। ब्रह्मचारी दिव्य गुणों का भंडारी बन जाता है। वह दिव्यगुणों का स्वामी हो जाता है। यह दिव्य गुण ही हैं, जिन्हें पाने के लिए ऋषि लोग वर्षो तक जंगलों की खाक छानते हैं तो भी वह उन्हें पाने में सफल नहीं होते। यह सब गुण ब्रह्मचारी के तप के परिणाम स्वरूप मिल जाते हैं। इस प्रकार वह ब्रह्मचारी प्रकाशमान परमेश्वर के ज्ञान वेद को अपने में धारण करने में सफल होता है।

आज की शिक्षा की सब से बड़ी समस्या यह है कि यह शिक्षा वेदाधारित नहीं है किन्तु तो भी आज का विद्यार्थी, जो ब्रह्मचारी के गुणों से संपन्न नहीं है, को भी अत्यधिक पुरूषार्थ की आवश्यकता होती है शिक्षा को पाने के लिए, जिस के परिणाम स्वरूप वह कुछ सीमा तक सुशिक्षा पाने में सफल होता है किन्तु इस समस्या का समाधान यह ही है कि आज भी प्राचीन शिक्षा पद्धति को अपनाए बिना विश्व का कल्याण संभव नहीं। यदि कोई कहे कि विज्ञान आदि को जानने के लिए आधुनिक पद्धति की शिक्षा आवश्यक है, अंग्रेजी का ज्ञान आश्वयक है। यह उनका भ्रम मात्र ही है। जिस लक्ष्मण रेखा को सीता जी की रक्षा के लिए लगाया गया था, वैसा बारूद अथवा वैसा शस्त्र आज तक इस सभ्य जगत् का विज्ञान नहीं बना सका जो एक और से मार करे किन्तु दूसरी और के रहने वाले को सुरक्षित रखे। हमारे आज के सब शस्त्र सब और से समान मार करते है तथा ऐसा करते हुए यह शत्रु और मित्र में भेद नहीं करते किन्तु लक्ष्मण रेखा रूपी शस्त्र शत्रु और मित्र में अंतर को समझते थे। अतः इस समस्या का एकमात्र समाधान है प्राचीन शिक्षा पद्धति, जिसे अपना कर ही हम अपने खोये हुए वैभव को पा सकते हैं।

thearyasamaj.org

सम्पूर्ण विश्व में शान्ति का एकमात्र उपाय-यज्ञ (हवन)

डा. गंगा शरण आर्य

पंचमहायज्ञों में द्वितीय "देवयज्ञ" अर्थात् अग्निहोत्र है इस यज्ञ के माध्यम से सम्पूर्ण सृष्टि में जलवायु के शुद्ध होने पर सभी जीवधारियों का कल्याण होता है संसार में उत्पन्न सभी प्राणी तभी स्वस्थ व सुखी रह सकते हैं जब पृथ्वी, जल, वायु, आकाश ये सारे तत्व (जिनसे हमारा जीवन चलता है) प्रदूषित न हों किन्तु आज ये सारे तत्व प्रदूषित हो चुके हैं अग्नि कीटाणुनाशक है। लू में रोगों के कीटाणु व मच्छर आदि मर जाते हैं ठीक इसी प्रकार अग्नि तत्व पृथ्वी, जल, वायु और आकाश की शुद्धि करता है और शुद्धिकरण करने के लिए उसे सृष्टि के सर्वश्रेष्ठ प्राणी (मनुष्य) के सहयोग की आवश्यकता है जो वह सृष्टि में उत्पन्न पुष्टिकारक, सुगंधित, रोग निवारक, औषधीय गुण युक्त पदार्थों को यज्ञ के माध्यम से अग्नि को समर्पित कर दें तो यज्ञाग्नि समस्त ब्रह्माण्ड के प्रदूषण को मिनटों में दूर कर दे मनुष्य ने टॉनिक तो अनेक बना लिए परन्तु ऐसा टॉनिक जो पेड़, पौधों, पशुओं, पक्षियों आदि सबका कल्याण करे वह केवल और केवल 'देवयज्ञ' अर्थात् अग्निहोत्र ही है। यह आप किसी यज्ञ शाला के समीप के पेड़-पौधों का निरीक्षण करके देख सकते हैं।

मानव परमपिता परमात्मा की श्रेष्ठतम एवं प्रियतम कृति है। जिस प्रकार माता-पिता नवजात शिशु के आगमन से पूर्व उसके सभी साजो-सामान व सुविधाओं की तैयारी करते हैं उसी प्रकार ईश्वर ने भी अपने मानवीय पुत्र के सुख के लिए सृष्टि को फल-फूल, मेवे, वनस्पतियों इत्यादि से सुसज्जित किया है और अपनी लाडली संतान इस मनुष्य को नानाविध अनमोल रत्न दिए। किन्तु ईश्वर की यही लाडली संतान आज इस ईश्वर प्रदत्त स्वर्ग वातावरण को नरक बनाने पर तुली है जिसके कारण पर्यावरण एक बड़ी चिन्ता का मुद्दा बन गया है। कहीं जमकर बारिश हो रही है, कहीं आकाश आग उगल रहा है, कहीं सुखा है, कहीं बाढ़ है, कहीं किसान अपनी जमीन पर दो-दो नहीं तीन-तीन फसल ले रहे है, कहीं किसान कर्ज के बोझ से आत्महत्या कर रहे है। कितनी ही नदियां जो सदा जल से परिपूर्ण रहती थी, या तो वे सूखती जा रही है या गंदे नालों में तब्दील हो रही हैं। जो धरती कभी सोना उगलती थी वह धीरे-धीरे बंजर व ऊसर हो गई है। जिन पहाड़ों पर घरों में पंखे की आवश्यकता भी कभी न पड़ती थी आज वहाँ ऐयर कन्डीशनर लगने लगे हैं। शहरों व गांवों में तापमान जितनी

thearyasamaj.org

तेजी से ऊपर चढ़ता है वह सब इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य ने जो अपनी ऐन्द्रिक सुख-सुविधा के लिए विकास की अन्धी दौड़ शुरू की है उसमें उसने प्रकृति की पूरी तरह से अनदेखी की है। मनुष्य जाति आज अपने अस्तित्व को खतरे में डाल रही है प्राकृतिक जीवनशैली के विनाश में लगकर मानव नहीं जानता कि जिस विज्ञान के माध्यम से वह विकासोन्मुख होना चाहता है वह प्रकृति को तो प्रभावित करता ही है साथ ही उसके अपने अस्तित्व को भी खतरे में डालता है। मानव के बिना सृष्टि का कोई अर्थ नहीं। जिस प्रकार हमारी माँ हर समय हमारे पालन पोषण के लिए उद्योग करती रहती है, उसी प्रकार ईश्वर प्रदत्त यह ममतामयी प्रकृति माँ भी मानव का कल्याण करने में सदैव तत्पर रहती है। जैसे पुत्र अपनी सांसारिक माँ का भरण-पोषण कर उससे आशीष प्राप्त करता है उसी प्रकार मानव का इस प्रकृतिरूपी माँ के लिए भी कर्तव्य है। वह प्रकृति से सिर्फ लेता है देता नहीं। वह पेड़ काटता है, लगाता नही। वह जमीन से पानी निकालता है, बारिश के पानी को रोकने का इंतजाम नहीं करता। वह बड़े-बड़े कारखाने लगाता है पर उनसे निकलने वाले रसायनों की ठीक से निकासी का कोई प्रबन्ध नहीं करता। उसका मकसद प्रकृति की कीमत पर ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाना है जिससे वह अपनी संतान को बहुत बड़ी संख्या में धन तो दे सकेगा, लेकिन वह उसे प्रकृति के कहर से कैसे बचा सकेगा। आने वाले समय में अर्थात् भविष्य में (वर्तमान में जो नींव पर्यावरण की रखी जा रहीं है के अनुसार) तेजाबी वर्षा होगी, नदियों में जल के स्थान पर मल होगा, मनुष्य को जगह-जगह पर थोड़ी-थोड़ी देर के अंतराल पर ऑक्सीजन बूथ से ऑक्सीन लेनी पड़ेगी। अतः उपरोक्त दुष्परिणामों से अपनी आने वाली संतान को बचाने के लिए क्या हमारा कर्तव्य नहीं है कि हम पेड़ों को काटने से बचाएं, नदियों को गंदा होने से बचाएं। इसलिए यदि हमने प्रकृति से कुछ लिया है तो बदल में उसे कुछ देना भी हमारा ही कर्तव्य है ताकि संसार में रहते हुए हम प्राकृतिक आपदाओं का शिकार न बनें। जब-जब मनुष्य प्रकृति से छेड़छाड़ करता है तब-तब विनाश के कगार पर आ खड़ा होता है। लेकिन हमारा सौभाग्य है कि हमने भारतभूमि पर जन्म लिया, ऐसी पवित्र धरा पर अपनी आँखे खोली जहाँ बालपन से ही हमें हमारे ऋषि-मुनियों ने, महर्षियों ने, पूर्वजों ने संस्कार के माध्यम से ही सही, पर हमें यज्ञों से जोड़ रखा है और यज्ञ के महत्व को समय-समय पर हमें समझाने का प्रयास किया है और हमें बताया जाता है (भले ही हम ध्यान न दें) कि वेद हमारे धर्मग्रन्थ है और हमारे जीवन के उपयोगी ज्ञान-विज्ञान वेदादिशास्त्रों में भरा पड़ा है। हमें उनसे लाभ उठाना चाहिए उनमें छुपे हुए रहस्यों को जानना चाहिए ताकि हमारा ही नहीं संपूर्ण विश्व का कल्याण हो सके। तो यज्ञ कीजिए और देखिए कि किस प्रकार विश्व में

thearyasamaj.org

(जहाँ आज चारों और अशांति का वातावरण है) शांति होती है।

सर्वप्रथम तो यज्ञ के महत्व को समझ लें कि यज्ञ क्यों करने चाहिए। आज से नहीं, सृष्टि के प्रारम्भ से ही अब तक कोई ऐसा देश नहीं है जहाँ यज्ञ को किसी न किसी रूप में न किया जाता है। इसके अलावा यवन देश के तत्ववेता 'प्लयूकी' ने आग को वायुशोधक माना है। चीन, जापान में होम को 'घोम- कहते है, ईरान के पारसी लोग हवन को भारतीयों की तरह करते आए है। वाशिंगटन की **अग्निहोत्री यूनिवर्सिटी "फाइव फील्ड पाथ"** नामक संस्था ने **अग्निहोत्री यूनिवर्सिटी** स्थापित करके अमेरिका जर्मन आदि अनेक पाश्चात्य देशों में यज्ञ के परीक्षण किए है। **फाईव फील्ड पाथ अर्थात् यज्ञ, दान, तप, कर्म और स्वाध्याय, यह एकदम वैदिक नाम उन्होंने स्वीकार किया है।** यहाँ तक कि जर्मनी में तो **बर्थोल्ड मोनिका जेहले** नामक जर्मन विद्वान तो यज्ञ की भस्म को अनेक रूप में चिकित्सार्थ प्रयोग करने का प्रचार करते हैं। **चिल्ली** के एण्डीज पर्वतों में एक विशिष्ट अग्नि मन्दिर अर्थात् यज्ञशाला तैयार की गई जहाँ सहस्रों व्याधियों से मुक्ति प्राप्त हो चुकी है। **वेदों के अनुसार होम चिकित्सा संसार का अति प्राचीन विज्ञान है।** अतः हम कह सकते हैं कि सार्वभौम सिद्धान्त है जिसे मनुष्य आज भूलता जा रहा है। **विज्ञान के शिखर पर पहुँच कर भी इस विज्ञान से अनभिज्ञ है।** यज्ञ के महत्व को जानते हुए भी अपने चारों ओर प्रदूषित वातावरण को शुद्ध न किया तो ऐसी जानकारी से क्या लाभ ? यज्ञ क्यों करें ? व्यर्थ में घी क्यों फूंके ? फिर यज्ञों में मंत्र पाठ करने से क्या लाभ? समिधा आदि का प्रयोग क्यों करें? ऐसी बातें इसलिए की जाती है क्योंकि हम यज्ञ के महत्व को तो जानते हैं लेकिन उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर नहीं जानते। हम अंधेरे से बचना चाहते हैं। हमें पता है बिजली है पर जब तक बल्ब नहीं लगाएगें, रोशनी कैसी होगी? हम मानसिक शांति चाहते हैं इसलिए ए मानव! जो कुछ भी आपके पास है उसे परमार्थ में बांटो अर्थात् यज्ञ करो, यज्ञ के माध्यम से हमारे अन्दर पवित्रता की भावनाएं जन्म लेगीं जिससे हमारे चित्त का पर्यावरण शुद्ध होगा और अशांति दूर होगी। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हमें वायु, जल, अन्न आदि की आवश्यकता होती है और यदि प्रकाश देने वाला सूर्य न हो, शीतलता, अन्न व औषध आदि में जीवन शक्ति डालने वाला रस भरने वाला चन्द्रमा न हो, बादल न हो, वर्षा न हो, ऋतुओं की अनुकूलता न हो, वृक्ष न हो, फल-फूल न हो तो हमारा जीवन कैसे चल सकता है। यज्ञ करने से ये शुद्ध होगें, इनके शुद्ध

thearyasamaj.org

होने से हमारा जीवन भी शुद्ध होगा। ये दूषित होगें तो हमारा शरीर भी अस्वस्थ रहेगा जैसे आजकल यज्ञों के अभाव में स्थिति बनती जा रहीं है। अतः इस यज्ञ के माध्यम से इन जड़ देवताओं को शुद्ध करो। वे (माँ की तरह) तुम्हें शुद्ध व स्वस्थ रहने का आशीष देगें। शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार - **'स्वर्गकामोयजेत'** अर्थात् स्वर्ग की कामना है तो यज्ञ करो। अग्निहोत्र ही सब सुखों की नौका है। साथ ही यह भी ब्राह्मण ग्रन्थों में ही कहा गया है। कि **''अग्निर्वै देवानाम मुखं''** सभी जड़ देवताओं का मुख अग्नि है। क्योंकि अग्नि में डाले हुए पदार्थ, पदार्थ विज्ञान के अनुसार कभी नष्ट नहीं होते अपितु रूपान्तरित होकर सूक्ष्म होकर लाखों गुणा शक्तिशाली हो जाते हैं। सूक्ष्म होकर अंतरिक्ष में फैल जाते है, व्यापक हो जाते हैं। अंतरिक्ष व द्युलोक में व्याप्त पर्यावरण को भी शुद्ध करने में सक्षम हो जाते है इसलिए **यजुर्वेद के 23वें अध्यय के 62वें मंत्र** में कहा गया है कि **''अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः''** अर्थात् इस यज्ञ को भुवन की नाभि कहा है। जो पदार्थ अग्नि में डाला जाता है वह अति सूक्ष्म रूप धारण कर कल्याणकारी हो जाता है। उदाहरण स्वरूप चीनी के थोड़े से दाने यदि अग्नि में डाल दिए जाए तो भयंकर रोग टी.बी. के बैक्टीरिया नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार जायफल, गुग्ल, लौंग मिलाकर यज्ञ में सामग्री के रूप में प्रयोग करने में मच्छरों का प्रकोप समाप्त हो जाता है। साथ ही यज्ञ के पश्चात् अग्नि जब कोयलों की आग के समान रह जाए तब उसमें नीम की पत्तिया एवं तुलसी के पत्ते डालने पर उनसे जो धुंआ उत्पन्न होगा उससे रोग के विषाणु नष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार मुनक्का, किशमिश आदि फलों को सामग्री में प्रयोग करने से टाईफाइड के कीटाणु 30 मिनट में तथा अन्य रोगों के कीटाणु एक या दो घण्टे में नष्ट हो जाते है।

देखिए आजकल, कल कारखानों, मिलों फैक्ट्रियों व वाहनों, रेलों इत्यादि से निकलने वाली जहरीली गैसों को थोड़े से लाभ के लिए हम सहन कर रहें है तो बहुत अधिक लाभ पहुंचाने वाले यज्ञ को क्यों न करें। यज्ञ की पुष्टिकारक गैसों से 96% हानिकारक कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। ऐसा **पूना के फर्ग्यूसन कॉलेज** के जीवाणु शास्त्रियों ने एक प्रयोग करने के बाद पाया, उन्होंने 36x22x10 घनफुअ के एक हाल में एक समय का यज्ञ किया परिणाम स्वरूप 8000 घनफुट वायु में कृत्रिम रूप से तैयार प्रदूषण का 77.5 प्रतिशत हिस्सा खत्म हो गया। जर्मनी के एक वैज्ञानिक

thearyasamaj.org

जो **कमेस्ट्री, बॉटनी, मेडिसिन, रेडियोलॉजी** के ज्ञाता तथा जर्मनी विश्वविद्यालय में पढ़ाते भी है ने लिखा है कि " After I tested Agnihotra myself it seems that with Agnihotra you have a wonder weapon in our hands" अर्थात् स्वयं अग्निहोत्र का परीक्षण करने के बाद मैंने पाया है कि सचमुच अग्निहोत्र के आचरण द्वारा मानो आपके हाथ में एक अद्भुत् शस्त्र आ जाता है (प्रदूषण के विरूद्ध)। इसी क्रम में वर्षा कराने हेतु भी भारत में कई वेद विज्ञानाचार्य व महानुभावों ने प्रयास किये जो सफल हुए। वृष्टि यज्ञ के सफल परीक्षण **कैलीफोर्निया के मिस्टर हैडफिल्ड ने भी किए है। वे दावे के साथ कहते हैं कि मैं आकाश से पानी बरसा सकता हूँ।** लगभग 500 बार वे इस प्रकार के परीक्षण कर चुके हैं। वे यज्ञाग्नि में ऐसे-ऐसे पदार्थ डालते हैं जिनसे वाष्प सघन होकर बरसने लगती है। यज्ञ द्वारा पर्यावरण शुद्धि का सबसे बड़ा उदाहरण तो आपने 2 दिसम्बर 1984 के विश्व स्तर के समाचार पत्रों में पढ़ा ही होगा कि **भोपाल में स्थित यूनियन कार्बाइड कारखाने से गैस रिसाव की खबर मिलते ही दो परिवार श्री एस. एल. कुशवाहा और श्री एस. राठौर ने अपने पूरे परिवार सहित यज्ञ करना प्रारम्भ कर दिया जिससे इन दोनों परिवारों पर हानिकारक गैसों का कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ा।** अतः सम्पूर्ण विश्व को प्रदूषण मुक्त करने व पर्यावरण संतुलन बनाए रखने, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, आंधी तूफान आदि उपद्रवों की शांति का एकमात्र उपाय यज्ञ ही है। यज्ञ के माध्यम से सारे विश्व के आसुरी विचारों का दमन होगा और सर्वत्र सुख शांति होगी। अतः यज्ञ करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है चाहे वह किसी भी प्रान्त, नगर या देश का क्यों न हो। क्योंकि आज जो सर्वत्र अशांति फैली हुई है कहीं न कहीं मनुष्य मात्र ही उसके लिए उत्तरदायी है। जो स्वयं को दोषी नहीं समझते तो एक छोटी सी बात के माध्यम से समझ जाएंगे। संसार का प्रत्येक व्यक्ति मलमूत्र त्याग करता है, श्वास-प्रश्वास की क्रिया करता है। विभिन्न वस्तुओं के गलने-सड़ने का कारण है। धूम्रपान तथा दुर्गन्ध फैलाने के कारण यज्ञ न करने वाला प्रत्येक व्यक्ति प्रकृति रूपी माँ का दोषी है। हमें अपने को दोषमुक्त करना होगा अन्यथा प्रकृति माँ अपना कहर बरसाना नहीं छोड़ेगी और उस कहर से बचने का स्वयं को दोषमुक्त करने का विश्व शांति में सहयोगी बनने का एकमात्र उपय यज्ञ है।

यज्ञ का अध्यात्मिक पहलु

यज्ञ का उद्देश्य केवल मात्र जलवायु को शुद्ध करना ही होता है तो इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु कहीं पर भी यांत्रिक प्रक्रिया द्वारा अग्नि

thearyasamaj.org

जलाकर उसमें घृत एवं सामग्री को फेंककर कर ली जाती। किन्तु यज्ञ का प्रयोजन केवल भौतिक ही नहीं अपितु आध्यात्मिक भी है जो कि भौतिक लाभों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। उसका संकेत संक्षिप्त रूप में यहाँ कर रहा हूँ- यज्ञ में जिन वेद मन्त्रों से आहुति दी जाती है उनसे पूर्व '**ओ३म**' का उच्चारण किया जाता है जिसमें हमें ज्ञात होता है कि समस्त प्राकृतिक पदार्थों का आदि मूल परमेश्वर है, अर्थात् हमारे पास जो भी धन, बल, विद्या, उन सबका उत्पादक, रक्षक, धारक, स्वामी, परमेश्वर है हम नहीं।

मन्त्र के अंत में प्रयुक्त होने वाला शब्द "**स्वाहा**" हमें प्रेरणा करता है कि हमेशा सु माने अच्छा आह माने बोले अर्थात् सदा प्रिय बोले तथा उत्तम वस्तुओं का दान किया करो। जैसा ज्ञान मन में है वैसा ही बोलो। यज्ञ कुण्ड में घी और सामग्री की आहुति डालने पर हर बार एक छोटा सा शब्द अन्त में बोला जाता है "**इदन्न मम्**" अर्थात् यह मेरा नहीं है। यह शब्द प्रेरणा करता है कि संसार की कोई भी वस्तु हमारी अपनी नही हो बार-बार ऐसा बोलने से सांसारिक वस्तुओं के प्रति हमारा मोह या ममता नष्ट हो जाती है और यह भावना बनती है कि आवश्यकता पड़ने पर अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु का त्याग कर दो।

इस प्रकार यज्ञ की प्रत्येक प्रक्रिया हमें संकेत करती है यज्ञाग्नि भी हमें अनेक प्रकार से प्रेरणा देती है। अग्नि के मुख्य रूप से तीन गुण है- प्रकाश, ताप और गति।

प्रकाश- यज्ञाग्नि हमें संकेत करती है कि प्रकाशित होओ न केवल वस्त्र, पात्र, भवन, धन, वाहन, सम्पत्ति आदि भौतिक पदार्थो से बल्कि सत्य, दया, प्रेम, संयम, त्याग, सेवा, ज्ञान-विद्वान आदि से अपने अन्तः करण को प्रकाशित करे। ताप यज्ञाग्नि हमें प्रेरित करती है कि ताप अर्थात् जलाओ। किसको? अपने अंदर छिपे राग, द्वेष, ईष्या, अहंकार, प्रमाद, मोह आदि कुवासनओं को ताकि हम सन्मार्ग की ओर अग्रसर होकर सुख की प्राप्ति कर सके।

गति- यज्ञाग्नि हमारे में भावना भरती है कि रूको नहीं, चलते रहो, बढ़ते रहो। बाधाएँ आएगी, कष्ट आएगें, साथी छूट जाएगें, असफलता भी मिलेगी फिर भी हताश निराश न होवे, नया उत्साह, नई प्रेरणा नए-नए शुभ संकल्प मन में लेकर उठो और तब तक आगे बढ़ते रहो जब तक आपका संकल्प पूरा न हो और यज्ञ के अंत में **सर्व वै पूर्ण स्वाहा**' कहकर शेष सब सामग्री घृत अग्नि को समर्पित कर दिया जाता है जो हमें बोध कराता है कि संसार में समस्त सम्बंध (जो हमारे वर्त्तमान में है) एक दिन समाप्त हो जाएँगे और यह शरीर भी हमारा न रहेगा केवल राख शेष रहेगी। अतः सांसारिक मोह का त्याग करो अन्यथा दुःख की प्राप्ति होगी। इस प्रकार संपूर्ण यज्ञ हमें किसी न किसी बात का प्रेरणा देता है और हमारी भावनाएँ, हमारा मानवीय व्यवहार लेने का नहीं

thearyasamaj.org

बल्कि देने का है ऐसी शिक्षा देता है और सिखाता है कि यदि हम किसी से ले भी तो उसे प्रकृति माँ की तरह अनेक गुणा बढ़ाकर लौटाए। जैसे यदि हम एक मुट्ठी भर अनाज बोते हैं तो उसी अनाज को धरती माँ एक गठरी बनाकर लौटा देती है जब एक गठरी भरकर अनाज बोते हैं तो धरती माँ एक बोरी बना कर लौटा देती है। इसलिए अपनी जीवनचर्या में, अपने दैनिक व्यवहार में इस यज्ञ रूपी माहनतम, श्रेष्ठतम कार्य को अपनाए तथा अपने परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के समक्ष उत्पन्न **ग्लोबल वार्मिंग** की समस्या का समाधान कर **"सर्वेभवन्तु सुखिनः"** की भावना को अपने हृदय में पल्लवित कर पुरूषार्थी बनें।

यज्ञ के महत्व व अध्यात्मिक पहलू को तो आपने समझ लिया, उसके द्वारा कौन-कौन से लाभ मानव जाति को प्राप्त होते हैं का ज्ञान भी हो गया परन्तु उसे अपने घरों में प्रतिदिन कैसे करना है, बस इतनी झिझक बाकी है। इस झिझक का ज्यादातर उत्तर यही मिलता है कि समय की कमी है और पैसे का अपव्यय! लेकिन ऐसा कहने वाले ज्यादातर लोग एक-एक घंटा मोबाईल पर बातें करने में समय बिता देते हैं, गपशत में, व्यर्थ की बातों में, टी. वी. देखने में और कितना समय फिजूल के कार्यों में बर्बाद कर देते हैं जबकि **दैनिक यज्ञ** करने में केवल 15 मिनट का समय लगता है। क्या ऐसे लोग दिन के 24 घंटे में से 15 मिनट का समय नहीं निकाल सकते? रहीं बात अपव्यय की इनमें से ज्यादातर लोग शराब, सिगरेट, कोल्ड ड्रिंक, जंक फूड आदि जो कि स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होते हैं, में पैसा खर्च करते हैं। अनावश्यक खिलौने व कपड़े चाहे कितने की मंहगे क्यों ना हो खरीद लेते हैं तो क्या दैनिक यज्ञ में खर्च होने वाले 40 या 50 रूपये का खर्च नहीं कर सकते? जबकि यज्ञ में खर्च होने वाले इस रूपये के बदले आप 150 या 200 रूपये का लाभ प्राप्त कर लेते हैं। बीमारी रहित होकर, शुद्ध भोजन व शुद्ध विचार प्राप्त कर अपना तथा औरों का कल्याण करते हैं ये क्या कम है? ये तो हुआ आपके पैसों का सही उपयोग एक तो आपके पैसे बचे, दूसरा परोपकार किया। लेकिन जो पैसा भी लगा सकते हैं और समय भी दे सकते हैं वे लोग यह सोचकर यज्ञ नहीं करते कि मेरे अकेले यज्ञ करने से क्या होगा और मैं ही न करूँगा तो क्या फर्क पड़ेगा? इसका संतोषजनक उत्तर यही है कि बूंद-बूंद से सागर बनता है। थोड़ी-थोड़ी भाप के कण विशाल बादलों का निर्माण करते हैं इसलिए यज्ञ को हमें अपने जीवन का अंग बनाना चाहिए तभी हमारा व सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण संभव है।

thearyasamaj.org

मन जीता जग जीता आत्मा का सच्चा मार्ग प्रभु के ज्ञानदर्शन सत्य-सत्य है

सुरेन्द्र कुमार ढांडा

आज हम समाचार पत्रों, टी.वी. से जो घटनाओं का समीक्षा करते हैं, उसका अनुभव यही सिद्ध करता है कि हर परिवार, घर, संतान, समाज की शांति भंग हो रही है। अंग्रेजी में कहते हैं Hierachy अर्थात् हर घटना या कर्म का सही संदेश ऊपर वाला नीचे पहुँचाये और नीचे वाला ऊपर पहुँचाये। यही कारण है आज आरूषी की हत्या ने सारे संसार में व्यभिचार ने लज्जा से सिर झुका दिया है। माता-पिता क्या नियंत्रण रखते थे, किस दुनिया में खो गये कि न तो उन्होंने आरूषी की समस्या जानकर उससे संपर्क किया, न बेटी ने माता से संपर्क किया जब समस्या मंजिल (सोपान) पर पहुँचकर शोक दिखता है तो समझ लो कि उस परिवार का ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर तक अनुशासन बिगड़ गया है, क्योंकि एक दूसरे का सही संपर्क न होता रहा और सही चित्र किसी को गंभीरता से न मिला न प्रयत्न किया। इसलिए घर की शांति भंग हुई, समाज, प्रबंधकों को ध्यान, कारण ढूंढने में लग गया। क्या अंत होगा यह कभी न कभी सच्चाई सामने आ ही जायेगी।

परमात्मा ने यह हीरा शरीर इसलिए नहीं दिया कि बुराईयों को जीवन का संघर्ष ज्वालामुखी पर्वत बनाओं और जब चाहो समाज का अनुशासन तोड़ो और उसका परिणाम पाओ। ईश्वर का विधान है सत्य का पालन करना, कर्मों से भावनाओं से, मन से, तन से अंतःकरण से, बुद्धि से और इन्द्रियों से, आत्मा से आत्मा की समीक्षा और प्रतिपादन हमारे वेदज्ञान ग्रंथों में इस प्रकार की है।

आत्मा मनुष्य के प्राण, ईश्वरीय देन तथा गतिविधियों का तत्व तथा शरीर (रथ) का रथी (सवार) है। शरीर आत्मा का निवास क्षेत्र है। जीवात्मा शरीर में प्रवेश नहीं होती है, कर्मों के आधार पर। प्रभु ने मनुष्य को आध्यात्मिक प्राणी रचकर बुद्धि को सारथी बनाया, मन को भावनाओं का मंदिर बनाया, शरीर को स्वामी बनाया, पर भावनाओं को दमन में खींचकर रखने के लिए लगाम मन को दी। कर्मों की व्यवस्था रथ (शरीर) में घोड़े बांधे जो ज्ञान इन्द्रियों कर्म इन्द्रियों द्वारा विषयों के मार्ग पर चलने के लिए उपलब्ध किया। पर प्रभु ने उपदेश सुनाया कि

thearyasamaj.org

शुभ कर्म करोगे तो शुभ फल आनंद पाओगे। अशुभ कर्म क्या फल देंगे। दु:ख कष्ट माया जाल में फंसना, तृष्णाओं में अंधा होकर कर्महीन व्यभिचार, काम, मोह, लोभ, क्रोधादि में लिप्त होकर कोल्हू के बैल की तरह चक्रकाटकर थक कर चूर हो जाओगे।

अस्तु कठोपनिषद् ने आत्मा आदि को ऐसे व्यक्त किया है, 'आत्मना: रथिनं विद्धि शरीर रथमेव तू'

बुद्धि तू सारथिं बिद्धि मनः प्रग्रहमेव च
इंद्रियाणि हयानाहुर्विषया रतेषु गोचरान'

आज जितनी भी बुराइयाँ होने लगी है, उन सबका कारण मन है। मन की गतिविधियाँ तीनों कालों में, भूत, वर्त्तमान, भविष्य काल हैं। मन का काम है। मनन करना, चिंतन करना या मानना या दूसरों को विवेक द्वारा आकर्षित करके अधीन करना।

गीता में कहा गया है - 'इंद्रियाणाम् मनश्वास्मि'

श्री कृष्ण ने गीता में कहा है, 'मैं अर्जुन इन्द्रियों में मन हूँ।' कठोपनिषद् ने कहा, इंद्रियों से सूक्ष्म मन है। हमारे भूत (दु:ख) मन की अनुभूति हैं मन का कार्य हैं संकल्प (Determination) जैसे राजकोट में मंदिर में मूर्ति को बांधकर रखा था चार समान मैग्नेट्स से। पर मन विकल्प भी है। जैसे महमूद गजनवी का चंचल पन पद्मनी को सुंदरता का भूखा था। पर ऋग्वेद में मन की 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्त' मेरा मन कल्याणकारी, संकल्प वाला हो, और कहा है, भद्रं नो अपि वातय मन:-मन को शुभ कीजिये। पातंजलि ऋषि ने मन को विवेचना चित्त से की है। योगश्चित वृत्तिनिरोध। चित्त का दमन ही योग है। योग मन से होता है तन से नहीं।

आज जो हत्या आरूषी की देखी जा रही है, कितने टेस्ट हुए, क्योंकि इन सबके पीछे किसी के मन की धारणा उत्पन्न होना एक कारण समझा जा रहा है। अस्तु मनुष्य के बीच जो आत्मा ने अनजाने ने जाने बुरें कर्म करने की दीवार उत्पन्न करी है, या लोभ, मोह, क्रोध का प्रतिशोध उत्पन्न किया है, यह ही कारण है कि हम सत्य को भुलाकर वह कर्म करते जा रहे हैं, जो दैविक शक्ति परमात्मा के विरूद्ध कर्म है और अब उसका फल पाना होगा, शीघ्र या देर से। क्योंकि प्रभु की सत्यता कभी छिप नहीं सकती। प्रभु के घर में देर पर अंधेर नहीं।

वैदिक धर्म की जय।
महर्षि दयानन्द की जय॥

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द-तिथ्यात्मक परिचय

पं० वेद प्रकाश शास्त्री, फाजिलका, पंजाब

1. जन्म नाम- मूलशंकर।
2. जन्म तिथि- फाल्गुन, कृष्णपक्ष, दशमी, विक्रमी संवत् 1881 तदनुसार 12 फरवरी, 1824 ईस्वी।
3. पितृ नाम- श्री कर्षन जी तिवारी। शिव के अनन्य भक्त।
4. पितृ व्यवसाय - लेन देन का कारोबार, विस्तृत भूसम्पत्ति के स्वामी, अत्यन्त धनाढ्य।
5. मातृ नाम- श्रीमती अमृत बेन।
6. जन्म स्थान- टंकारा, मौरवी राज्य, गुजरात।
7. वर्ण - सामवेदी, औदीच्य ब्राह्मण।
8. विद्यारम्भ - पांचवे वर्ष। देवनागरी अक्षरज्ञान। वर्ण शिक्षा आरम्भ। अनेक मन्त्र, श्लोकों को कण्ठस्थ करना। गायत्री मन्त्र एवं सन्ध्योपासना का अभ्यास।
9. उपनयन- (जनेऊ) संस्कार- आठवें वर्ष। गृहशिक्षा-चौदहवें वर्ष के पूर्व ही व्याकरण और शब्द रूपावली का अभ्यास करके यजुर्वेद एवं रूद्राध्यायी सम्पूर्ण तथा अन्य वेदों का थोड़ा-थोड़ा भाग कण्ठस्थ किया।
10. शिवरात्रि व्रत- तेरहवें वर्ष। शिवमन्दिर में पूर्ण श्रद्धा से व्रत एवं पूजन। शिवलिंग पर चढ़े प्रसाद को चूहों द्वारा खाए जाते हुए देख कर अपना बचाव न किए जाने के कारण उन्हें सामर्थ्यहीन, निःशक्त जानकर शिव के प्रति अविश्वास। गृहवापसी। सच्चे शिव की प्राप्ति का दृढ़ निश्चय।
11. वैराग्योदय - बहन और चाचा की मृत्यु के दृश्य को देखकर संसारिक जीवन के प्रति विरक्ति।
12. वैवाहिक बन्धन- सांसारिक जीवन के प्रति उदासीनता देखकर माता-पिता द्वारा मूलशंकर को वैवाहिक बन्धन में बांधने का असफल प्रयास।
13. गृहत्याग- बाईस वर्ष की आयु में वैवाहिक तैयारिंया देखकर विक्रमी संवत् 1903 तदनुसार 1846 ईस्वी में गृह त्याग दिया।
14. ब्रह्मचर्य शिक्षा- एक ब्रह्मचारी से नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर "**शुद्धचैतन्य**" नाम धारण किया।
15. संन्यास दीक्षा - विक्रमी संवत् 1904, सन् 1847 ईस्वी। स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास दीक्षा लेकर "**स्वामी दयानन्द सरस्वती**" नाम से विख्यात हुए।
16. योगगुरू-स्वामी योगानन्द, स्वामी शिवानन्द गिरी, स्वामी ज्वालानन्द पुरी।
17. शास्त्रीय गुरू- गुरूवर दण्डी विरजानन्द। स्थान-मथुरा। भेंट का समय-कार्तिक, शुक्लपक्ष, द्वितीया, विक्रमी संवत्

thearyasamaj.org

1917 तदनुसार 14 नवम्बर, 1860 ईस्वी।

18. अध्ययन काल - लगभग तीन वर्ष। अष्टाध्यायी, महाभाष्य पर पूर्णरूपेण अधिकार हो जाने पर दयानन्द ने वेदों के प्रकृत अर्थों को समझने तथा वैदिक साहित्य का पूर्ण अधिकारी बनने के लिए निरूक्त, निघण्टु प्रभृति वैदिक ग्रन्थ भी गुरू विरजानन्द से पढ़े।

19. गुरूदक्षिणा - समय- विक्रमी संवत् 1920 सन् 1863 ईस्वी। गुरू को लौंग प्रिय होने से भेंट में लौंग ले गए। गुरू ने कहा - "दयानन्द! मैं लौंग नहीं चाहता अपितु मेरी इच्छा है कि आजीवन वेद एवं आर्षग्रन्थों का प्रचार करके आज्ञानान्धकार को दूर करो। नाना मतमतान्तर और फैली हुई कुरीतियों को मिटाओ। वैदिक धर्म का पुनरूद्धार करो यही मेरी गुरू दक्षिणा है।"

दयानन्द से बिना ननुनच किए कहा- " तथास्तु"! और गुरूजी का आशीर्वाद लेकर कार्यक्षेत्र में उतर पड़े।

20. गुरू जी का महाप्रयाण- अश्विन मास, कृष्णपक्ष, त्रयोदशी, विक्रमी संवत्- 1925 को मथुरा में देहावसान। दयानन्द के उद्गार- "आज व्याकरण का सूर्य अस्त हो गया।"

21. पाखण्ड-खण्डिनी पताका- हरिद्वार का कुम्भ मेला आर्यावर्त का एक अद्भुत और अतुलनीय मेला है। अपने उद्देश्य की उद्घोषणा हेतु उचित अवसर जानकर कुम्भ संक्रान्ति से एक माह पूर्व ही चैत्र संवत् 1924 तदनुसार 1867 ईस्वी में हरिद्वार पधारे। हरिद्वार और ऋषिकेश के बीच भीमगोर्ड के समीप पर्णकुटी बनाई। प्रचार स्थल पर "पाखण्डी-खण्डिनी पताका" फहराकर उस पौराणिक गढ़ में वैदिक धर्म की दुन्दुमि बजा दी।

22. आर्य समाज की स्थापना- स्थान- मुम्बई। गिरगांव मोहल्ला (रोड) प्रार्थना समाज मन्दिर के निकट डॉ० माणिक जी की वाटिका। समय-सायम् 5.30 बजे। सन् 1875 ई०।

23. रूग्ण-शय्या पर - रूग्णावस्था में अत्यधिक कष्ट होने पर भी महाराज के मुख पर किसी प्रकार के शोक या धबराहट के चिन्ह न थे। मुख से कभी भी कष्ट सूचक शब्द न निकला। उन्होंने संस्कृत में ईश्वरोपासना की और भाषा में ईश्वर का गुणकीर्तन किया। गायत्री मन्त्र का पाठ करके समाधिस्थ हुए। तत्पश्चात् आंखें खोली और बोले- " हे दयामय! हे सर्वशक्तिमन् ईश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा! तूने अच्छी लीला की।" और देखते ही देखते महर्षि की इहलीला समाप्त हुई।

24. ऋषि-निर्वाण- कार्तिकमास, कृष्णपक्ष, अमावस्या तिथि, मंगलवार (दीपावली पर्व) विक्रमी संवत् 19401 तदनुसार 30 अक्टूबर, 1883 ईस्वी। समय- सायम् 6 बजे। स्थान- अजमेर।

thearyasamaj.org

बिहार के विभिन्न आर्य समाजों में अगामी वेद प्रचार कार्यक्रम

आर्य समाज, भागलपुर
तिथि- 25, 26, 27 फरवरी 2015
आमंत्रित विद्वान- पं० संजय सत्यार्थी

आर्य समाज, हरपुर जान, सारण
तिथि- 2, 3, 4 मार्च 2015
आमंत्रित विद्वान- पं० संजय सत्यार्थी
भजन- पं०- दयानन्द सत्यार्थी

आर्य समाज, अलीगंज, जमुई
तिथि- 12, 13, 14 मार्च 2015
आमंत्रित विद्वान-
आ०वेद प्रकाश क्षेत्रिय, दिल्ली
पं० संजय सत्यार्थी, पटना
भजन - पं० दिनेशदत्त, दिल्ली
बहन अमृता आर्या, दिल्ली

आर्य समाज, केन्दुआलेवार, जमुई
तिथि- 21, 22, 23 मार्च 2015
आमंत्रित विद्वान-
पं० नेम प्रकाश शास्त्री, लखनऊ
पं० अमर सिंह जी आर्य, राजस्थान
बहन त्रच्चा योगमची, खगड़िया

आर्य समाज, ढाका, पू० चम्पारण
तिथि- 25, 26, 27, 28 मार्च 2015
आमंत्रित विद्वान-
आ० असर्फी लाल शास्त्री, इलाहाबाद
पं० संजय सत्यार्थी, पटना
भजन - पं० कुलदीप विद्यार्थी, विजनौर
मुख्य अतिथि- श्री रमेन्द्र कु० गुप्ता, मंत्री
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना

आर्य समाज, बिहार शरीफ
तिथि- 2 से 5 अप्रैल 2015
आमंत्रित विद्वान-
आ० असर्फी लाल शास्त्री, इलाहाबाद
भजन - पं० कुलदीप विद्यार्थी 'विजनौर'
पं० संजीव रूप, दिल्ली

आर्य समाज, झाझा, जमुई
तिथि- 4, 5, 6 अप्रैल 2015
आमंत्रित विद्वान-
पं० महेन्द्रपाल आर्य, दिल्ली
पं० संजय सत्यार्थी, पटना
पं० भानु प्रकाश आर्य, बरेली
वहन धर्म शक्षिता, बेगुसराय
मुख्य अतिथि- श्री रमेन्द्र कु० गुप्ता, मंत्री
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना

आर्य समाज, वथानी, गया
तिथि- 2 से 5 अप्रैल 2015
आमंत्रित विद्वान-
पं० विष्णुमित्र वेदार्थी, विजनौर
भजन - बहन सुमन आर्या, समस्तीपुर

आर्य समाज, चाकन्द, गया
तिथि- 6 से 9 अप्रैल 2015
आमंत्रित विद्वान-
आर्चाय राजदेव जी, ओरैया, कटरा
पं० संजय सत्याथी, पटना
भजन - पं० कुलदीप विद्यार्थी, विजनौर

thearyasamaj.org

वस! उसी घटना से बालक के मन में ज्ञान मानु का उदय होता है, शिव रात्री वोध रात्री बन जाती है। आर्य समाज की स्थापना का वीजांकुर यहीं से प्रस्फुटित होने लगता है। इस घटना से बालक ने जो उपदेश प्राप्त किया वह संसार को हिला कर रख दिया। दुनियाँ को वेदों की ओर लौटने के लिये वाध्य कर दिया। मूल शंकर से दयानन्द बन समग्र क्राँति का अग्रदूत वन गया। गुरूवर विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त कर सबसे पहले कुम्भ के मेले के अवसर पर हरिद्वार जाकर पौराणिक नगरी की छाती पर पाखण्ड-खण्डिणी पताका गाड़ कर सत्य का पश्चम लहराते हैं और **'वेदों की ओर लोटने'** का संदेश देकर पुनः वेदों की प्रतिष्ठा स्थापित करते हैं। यहीं पर 'सर्ववै पूर्ण स्वाहा' कहकर अपना सर्वस्व समर्पण कर सत्य के प्रचारार्थ चलने को तैयार हो जाते हैं। उसके बाद वेदों के भाष्य, सत्योपदेश, आर्य समाज की स्थापना, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि आदि ग्रंथों की रचना, अनेकानेक शास्त्रार्थ कर धर्म की पुर्न स्थापना, स्वराज्य का शंखनाद, कृण्वन्तोविश्वमार्यम् का संदेश, ब्रह्मा से लेकर जैमिणी पर्यंत ऋषियों की परम्परा स्थापित करना आदि अद्‌भुत कार्यों को संसार के वीच उपस्थित करते हैं।

महर्षि दयानन्द प्रणीत कार्यों के अवलोकन मे ज्ञात होता है कि मात्र दस वर्ष के अल्पकाल में जो कार्य ऋषि ने किया वह शिवरात्री के अवसर पर ली गई उनके संकल्पों का ही परिणाम था, जो शिवरात्री, वोध रात्री बन कर सम्पूर्ण संसार के कल्याण का मार्ग प्रश्स्त कर दिया।

आज शिव रात्री की घटना चीख-चीख कर दयानन्द के शिष्यों को उपदेश दे रही है कि जो संकल्प ऋषि ने लिये थे ऐसे ही संकल्प आप भी लो और आर्य समाज तथा वेदों के संदेशों को जन-जन में स्थापित करो, याद रखों उपदेश ग्रहण करने वालों का ही उपदेश प्रभावी होता है। मनसा वाचा कर्मणा का संदेश धारण कर अपने आप को माँ आर्य समाज के लिये समर्पित करें यही शिवरात्री का संदेश है।

पं० संजय सत्यार्थी
सह सम्पादक

thearyasamaj.org

चम्पारण जिला आर्य सभा के तत्त्वावधान में

चम्पारण जिला आर्य महासम्मेलन

21 मार्च शनिवार से 24 मार्च मंगलवार 2015 तक
तदनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (आर्यसमाज स्थापना दिवस)
से चैत्र शुक्ल 4 संवत् 2062 तक

कार्यक्रम की मुख्य विशेषताएँ

आर्यों का महा कुम्भ
चम्पारण की सभी 150 आर्यसमाजों सम्मिलित होंगी
विद्वानों, संन्यासियों, भजनोपदेशकों, कार्यकर्त्ताओं का विशाल संगम
विराट् यज्ञ, भजन-प्रवचन, गोष्ठियाँ, विशाल साहित्य भंडारक तथा अन्य आकर्षण
भोजन एवं आवास की उत्तम व्यवस्था

विशाल शोभा यात्रा- दिनांक 21 मार्च 2015 को अपराह्न 2 बजे से निकाली जाएगी।

अतः आप सभी धर्म प्रेमी सज्जनों एवं माताओं से अनुरोध है कि इस महायज्ञ में पधार कर वेद की अमृत वाणी से अपने हृदय को तृप्त करें एवं तन-मन-धन से सहयोग कर इस कार्यक्रम को सफल बनाएँ।

प्रगति मैदान दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला 14 फरवरी 2015 से 22 फरवरी 2015 तक लगने जा रहा है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के द्वारा भी वैदिक साहित्य के विक्रय एवं प्रचार हेतु दुकानें लगाई जा रही है। जो कि प्रचार हेतु छूट पर दी जाएगी। कुछ साहित्य पर विशेष छूट भी दी जाएगी। तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को प्रचारार्थ मात्र 10/- रुपये में उपलब्ध कराया जाएगा। आप सभी बच्चों सगे सम्बन्धियों एवं इष्ट मित्रों सहित वैदिक साहित्य क्रय कर वेद, धर्म, शिक्षा, संस्कृति एवं सभ्यता तथा अपने प्राचीन भारतीय गौरव का ज्ञान प्राप्त कर स्वयं लाभ उठाएँ।

भवदीय
एस.पी. सिंह

मुद्रित सामग्री

सेवा में,
श्री/मेसर्स........................
मो0........................
पो0........................
जिला........................

प्रेषक :
सभा-मंत्री
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला
पटना-८०० ००४

(प्रेषिती के न मिलने पर यह अंक प्रेषक को ही लौटा दें।)

स्वत्वाधिकारी, बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा,, श्री मुनीश्वरानन्द भवन, नयाटोला, पटना-4 के लिए श्री रमेन्द्र कुमार गुप्ता (मंत्री) द्वारा जय उमा प्रिन्टर्स, पटना द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।